स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म

पाठ्यक्रम

घोषणा

COPYWRITE 2017- EDUCATIONAL RESOURCES
PERMISSION TO FREELY COPY AND DISTRIBUTE,
BUT PLEASE CREDIT SOURCE

परिचयः पाठ्यक्रम विवरण[1]

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की सहायता करता है कि वे सुसामाचार-प्रचार संबंधित तथा आत्मिक उन्नति से संबंधित विषयों पर बाइबल आधारित संदेश बनाने के लिये अध्ययन करे, उनका मूल्यांकन करे, उन्हें तैयार करें और उनका प्रचार करे। उपदेशों के विभिन्न वर्गीकरण को गौर से देखा गया है: पद्धति, विषय-वस्तु, शास्त्रपाठ, प्रतिपादन तथा संरचना। संरचना से संबंधित वर्गीकरण का विस्तार से विश्लेषण किया गया है: विषयसंबंधी, पाठ-विषयक, तथा व्याख्यात्मक। पाठ्यक्रम के अगले आधे भाग में विद्यार्थी 'सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश देना' इस मैन्युअल से दी गई पाठ्य-वस्तु का अध्ययन करेंगे, इस उद्देश्य से कि अविश्वासियों के मध्य किस प्रकार प्रचार किया जाये। विद्यार्थी, आराधना सभा, प्रार्थना सभा, बाइबल अध्ययन, व्याख्यान, सेमिनार तथा स्कूल की सभाओं में जैसी विभिन्न परिस्थितियों में संदेशों का प्रचार करेंगे।

विभाग		पाठ	अभ्यास-कार्य
प्रस्तावना	1.	प्रस्तावना - पाठ्यक्रम विवरण (पहला दिन)	
	2.	आपके संदेश के लिये रूपरेखा (पहला दिन)	
संदेश-प्रचारक	3.	उपदेशक की प्राथमिकताएं	
	4.	उपदेशक का रूपचित्र	
उपदेश वर्गीकरण	5.	उपदेशों का वर्गीकरण	
	6.	विषयसंबंधी उपदेश	'मसीह के शिष्य' पर विषयसंबंधी उपदेश
	7.	विषयसंबंधी उपदेश: मसीह का पुनरागमन - 1	
	8.	विषयसंबंधी उपदेश: मसीह का पुनरागमन - 2	
	9.	पाठ-विषयक उपदेश	'मसीह का पुनरागमन' पर पाठ-विषयक उपदेश
	10.	पाठ-विषयक उपदेश का उदाहरण	
	11.	पाठ-विषयक उपदेश का उदाहरण	
	12	पाठ-विषयक उपदेश का उदाहरण	
	13.	व्याख्यात्मक उपदेश	'पवित्रता' पर व्याख्यात्मक उपदेश
	14.	व्याख्यात्मक उपदेश की तैयारी	
	15.	व्याख्यात्मक - विविध दृष्टिकोणीय उपदेश	
	16.	व्याख्यात्मक उपदेश का उदाहरण	
घटक	17.	उपदेश के लिये बाइबल पाठ	
	18.	उपदेश में उदाहरण	
	19	उपदेश की प्रस्तावना	
	20.	उपदेश का उपसंहार (समापन)	
	21.	आमंत्रण (भाग - 1)	आत्मिक उन्नति के लिये तीन उपदेशों की रूपरेखा
	22.	आमंत्रण (भाग - 2)	

विभाग		पाठ	अभ्यास-कार्य
'सुसमाचार-प्रचारीय संदेश देना' डॉक्टर रॉबर्ट कोलमेन द्वारा संपादित		**'सुसमाचार-प्रचारीय संदेश देना' पाठ्यक्रम**	
	23.	प्रस्तावना: 'सुसमाचार-प्रचारीय संदेश देना'	
	24.	क्या? उपदेश का उद्देश्य: पापियों का उद्धार	
	25.	क्या? उपदेश का आग्रह: खोये हुओं के प्रति प्रेम	
	26.	क्या? उपदेश की विषय-वस्तु: मसीह का सुसमाचार	
	27.	क्या? उपदेश की बनावट: बताना और आमंत्रण देना	
	28.	कैसे? बाइबल का महत्व	
	29.	कैसे? प्रार्थना की आवश्यकता	
	30.	कैसे? सामग्री को क्रमबद्ध करना	
	31.	कैसे? संदेश प्रचार करने के नमूने	
	32.	कौन? प्रचारक	
	33.	कौन? श्रोतागण	
	34.	कौन? सलाहकार	
	35.	कौन? पवित्र आत्मा	
मूल्यांकन		**मूल्यांकन फॉर्म**	पास्टर/सलाहकार का चुनाव करना दो-दो की जोड़ियां बनाना उपदेश देने के लिये कलीसिया जाना 3 सुसमाचारीय संदेश के अंतिम प्रारूप
	1.	विद्यार्थी/सलाहकार करारनामा	
	2.	उपदेश क्रमांक 1 के लिये कार्य पत्रक	
	3.	उपदेश क्रमांक 2 के लिये कार्य पत्रक	
	4.	उपदेश क्रमांक 1 की प्रस्तुति पर सलाहकार की रिपोर्ट	
	5.	उपदेश क्रमांक 2 की प्रस्तुति पर सलाहकार की रिपोर्ट	
	6.	सलाहकार का अंतिम निरीक्षण पत्रक	

आपके संदेश के लिये रूपरेखा

निर्देश:

नीचे दिया गया फार्म, उपदेश को क्रमबद्ध करने तथा लिखने में आपकी सहायता करेगा। इसमें तीन प्रमुख विभाग है जिन्हें उपदेश की रूपरेखा में विकसित किया जाना है। जैसे-जैसे आप इस पाठ्यक्रम में बढ़ते जायेंगे, आप कम-से-कम चार प्रकार के उपदेश तैयार करना सीख लेंगे। प्रत्येक प्रकार को सीख लेने के बाद, आप इस फार्म की सहायता से तैयार की गई सामग्री के उपयोग से उपदेश को विकसित करेंगे और प्रस्तुत करने का अभ्यास करेंगे।

1.	**सूचना**	(इस विभाग के उत्तर इस खाने में लिखिये।)
	1.1 आपका नाम क्या है? 1.2 यह किस प्रकार का उपदेश है?	
2.	**प्रस्तावना/परिचय**	(इस विभाग के उत्तर इस खाने में लिखिये।)
	2.1 आपके उपदेश का प्रथम वाक्य क्या है? (एक रुचिकर तथा आकर्षक वाक्य)	
	2.2 वह वाक्य क्या है जिसमें बाइबल का हिस्सा सम्मिलित है?	
	2.3 मूल-विषय बताने वाला वाक्य क्या है? (वह वाक्य जो आपके उपदेश के मूल विषय को बताता है।)	
	2.4 वह वाक्य क्या है जिसमें उपदेश का शीर्षक है?	
	2.5 वह वाक्य क्या है जिसमें संदेश का लक्ष्य सम्मिलित है?	
	2.6 उपदेश की प्रस्तावना/परिचय का सारांश क्या है?	

3.	**मूख्य भाग**	(इस विभाग के उत्तर इस खाने में लिखिये।)
	3.1 आपके उपदेश के प्रमुख तथा छोटे मुद्दे (तर्क/बिन्दु) क्या हैं?	
	3.2 प्रत्येक प्रमुख परिच्छेद का प्रथम वाक्य क्या है?	
	3.3 प्रत्येक परिच्छेद के साथ जाने वाले बाइबल पद कौनसे हैं?	
	3.4 प्रत्येक परिच्छेद से मेल खाने वाले उदाहरणों के शीर्षक क्या हैं?	
	3.5 आपके लक्ष्य की ओर जाने वाला और लक्ष्य को जोर देकर बताने वाला वाक्य क्या है?	
4.	**उपसंहार (समापन/निर्ष्कष)**	(इस विभाग के उत्तर इस खाने में लिखिये।)
	4.1 आपके लक्ष्य को स्पष्ट करने वाला वाक्य क्या है?	
	4.2 आपके उपसंहार का सारांश क्या है?	
	4.3 आपके उपसंहार और आमंत्रण के बीच का वाक्य क्या है?	
5.	**आमंत्रण**	(इस विभाग के उत्तर इस खाने में लिखिये।)
	5.1 आप किस प्रकार का आमंत्रण देंगे? (आगे वेदी पर बुलाना, साथ के कमरे में बुलाना, हाथ उठाना, खड़े रहना, सब के चले जाने के बाद सभा के स्थान में ठहरे रहना, इ.)	
	5.2 अपने आमंत्रण में आप किस आवश्यकता और किस प्रकार के श्रोताओं को लक्ष्य बना रहे हैं?	
	5.3 आपके आमंत्रण का प्रथम वाक्य क्या है?	
	5.4 आपके आमंत्रण का अंतिम वाक्य क्या है?	

उपदेशक की प्राथमिकताएं - प्रेरितों के काम 20:17-38

1. अपने व्यवहार में अपने आप की चौकसी रखो

1.1. विनम्र बनो	प्रेरितों 20:28
1.2. करुणामय बनो	प्रेरितों 20:19
1.3. स्थिर बने रहो	प्रेरितों 20:19,31
1.4. संतुष्ट बने रहो	प्रेरितों 20:33-35
1.5. अपने विवेक की चौकसी करो	प्रेरितों 20:26

2. अपने परिवार की परवरिश करो

2.1. अपने आप की	तीमुथि. 6:11-12
2.2. अपने पत्नी की	इफिसियों 5:22-32
2.3. अपने बच्चों की	इफिसियों 6:1-4

3. अपने झुण्ड की रखवाली करो **प्रेरितों 20:28**

3.1. उसे बहुमूल्य जानो	फिलिप्पियों 2:3
3.2. उसे चराओ	यूहन्ना 21:15-17; 1 पतरस 5:2
3.3. उसकी अगुवाई करो	भजन संहिता 77:20
3.4. अपने झुण्ड की रखवाली करो, उसे चेतावनी देते रहो	इब्रानियों 13:17
3.4.1. सिद्धांतों से संबंधित ठग-विद्या और भ्रम के संबंध में	इफिसियों 4:14
3.4.2. भावनात्मक पकड़ के संबंध में	इफिसियों 4:27
3.4.3. भौतिक फंदों के संबंध में	1 तीमुथि. 6:6-10
3.4.4. आत्मिक तीरों के संबंध में	इफिसियों 6:16-18
3.4.5. मानसिक गढ़ों के संबंध में	2 कुरिंथियों 10:4

4. अपने झुण्ड को प्रशिक्षित करो

4.1. विश्वासी तथा सिखाने के योग्य मनुष्यों को चुनो और उन्हें कार्य सौंपो	2 तीमुथि. 2:2
4.2. शिष्य बनाओ	मत्ती 28:19-20

5. अपने झुण्ड को चराओ

5.1. वचन अध्ययन तथा प्रार्थना	प्रेरितों 20:32
5.2. प्रचार करो तथा सिखाओ	प्रेरितों 20:20,27

6. अपने झुण्ड को काम में लगाओ

6.1. पुनरुत्पादन करने तथा फल लाने में	यूहन्ना 15:1-8
6.2. जीवन में परिवर्तन लाने के लिये कार्य और प्रार्थना करने में (परिवर्तन उनके अपने जीवन में, जिन्हें वे शिष्यता सीखा रहे हैं उनके जीवन में, अपने शहर में, अपने देश में और जगत में)	प्रेरितों 1:8
6.3. गवाह बनने के लिये स्वयं बाहर जाने और दूसरों को भी भेजने के लिये	मत्ती 4:19; यूहन्ना 20:21

उपसंहार

सब से बढ़कर यह कि "वचन का प्रचार कर"

उपदेशक का रूपचित्र

1. वह भंड़ारी है: परमेश्वर ने उसे संदेश तथा अधिकार सौंपा है। 1 कुरिंथि 4:1-2

1.1. वह परमेश्वर के वचन की चिंता करता है

1.2. वह अपने संदेश के विषय-वस्तु की चिंता करता है

1.3. वह चिंता करता है कि उसके संदेश की विषय-वस्तु बाइबल से ही है

1.4. वह चिंता करता है कि वह परमेश्वर की अधिनता में बना रहेगा

1.5. वह चिंता करता है कि अपनी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बना रहेगा

2. वह संदेशवाहक है: उपदेशक घोषणा करता है और निवेदन करता है

2.1. वह घोषणा करता है

2.1.1. परमेश्वर मेलमिलाप का कर्ता है। 2 कुरिंथि 5:19

2.1.2. मसीह मेलमिलाप का बिचवई (मध्यस्थ) है। 2 कुरिंथि 5:19

2.1.3. पापों को दूर किया जाना और परमेश्वर के द्वारा धार्मिकता दी जाना ये मेलमिलाप के परिणाम हैं। इब्रा 2:17

2.2. वह निवेदन करता है

2.2.1. "हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं"। 2 कुरिंथि 5:20

2.2.2. परमेश्वर अपना निवेदन हमारे द्वारा करता है

2.2.3. बिना घोषणा के कोई निवेदन नहीं हो सकता और बिना निवेदन कोई घोषणा नहीं है

2.3. भंड़ारी तथा संदेशवाहक के मध्य भिन्नताएं हैं

2.3.1. भंड़ारी अपने घर को पोषित करता है; संदेशवाहक संपूर्ण जगत को घोषणा करता है

2.3.2. भंड़ारी मसीह के वचन की व्याख्या करता है; संदेशवाहक मसीह के कार्यों की घोषणा करता है

2.3.3. भंड़ारी वस्तुओं को बांटने में विश्वासयोग्यता प्रकट करता है; संदेशवाहक प्रतिउत्तर की अपेक्षा करता है

2.4. उसके पास मसीह का राजदूत होने की जिम्मेवारी है

3. वह गवाह है: उपदेशक परमेश्वर के वचन के सत्य की गवाही अपने स्वयं के अनुभव से देता है

3.1. वह परमेश्वर की महिमा की घोषणा करता है

3.2. वह जगत के समक्ष परमेश्वर के उद्धार की गवाही का प्रमाण प्रकट करता है

3.3. वह अपने जीवन में परमेश्वर के द्वारा पवित्रकरण किये जाने की गवाही संतों के लिये देता है

3.4. उसकी गवाही परमेश्वर की संपूर्ण मनसा के अनुरूप होती है । प्रेरितों 20:27

4. वह एक पिता है:

जो उसकी आत्मिक देखरेख में होते हैं उनसे उपदेशक पिता की कोमलता से प्रेम करता है:

4.1. एक प्रचारक को अपने झुण्ड से वैसे ही प्रेम करना है जैसे एक पिता अपने बच्चों से करता है

4.1.1. यह स्नेह अक्सर दूसरे के मन परिवर्तन का कारण होता है

4.1.2. यह स्नेह झुण्ड के आत्मिक विकास में सहायक होता है

4.2. प्रचारक को अपने झुण्ड को वैसे ही भली भांति जानना होता है जैसे एक पिता अपने बच्चों को भली भांति जानता है

4.2.1. पिता-समान प्रेम होना हमारी सहायता करता है कि हम अपने झुण्ड को समझें और हमारे झुण्ड की सहायता करता है कि वे हमारे संदेश और हमारी चिंता को समझे

4.2.2. पिता-समान प्रेम होना हमें हमारे व्यवहार में कोमल बनायेगा

4.2.3. पिता-समान प्रेम होना हमारी सहायता करेगा कि हम सरल शब्दों में सिखायें

4.2.4. पिता-समान प्रेम होने से हम मसीह के पीछे आने का निवेदन आग्रह के साथ कर सकेंगे

4.2.5. पिता-समान प्रेम हमें हमारे शब्दों तथा कार्यों में दृढ़ एवं भरोसेमंद बनायेगा

4.2.6. पिता-समान प्रेम हमें हमारी प्रार्थनाओं में परिश्रमी बनायेगा

5. वह एक सेवक है: उपदेशक सेवा करते हुये अगुवाई करता है **यूहन्ना 13:2-11**

5.1. यीशु ने अपने उदाहरण से सिखाया कि अगुवों को सेवक होना चाहिये फिलिप्पियों 2:6-7

5.2. वह जो राजाओं का राजा और सारी सृष्टि का प्रभु है, उसने अपने शिष्यों की सेवा एक दास के समान की। गलातियों 5:30

5.3. "पादरी" तथा "डीकन" का खरा अर्थ "सेवक" तथा "दास" है। फिलिप्पियों 2:3

5.4. उपदेशक को सर्वदा सेवा करने के लिये तैयार रहना है, ना कि सेवा लेने के लिये। मरकुस 10:45

5.5. परमेश्वर हमें अपनी ईश्वरीय सामर्थ से अभिषिक्त करता है जब हम उसकी सेवा अपनी दुर्बलता में नम्र सेवकों के समान करते हैं। 2 कुरिंथि 11:30; 12:9-10; 13:4,9

5.6. हमारी परमेश्वर तथा कलीसिया के प्रति जो सेवा है वह मात्र तब ही ग्रहणयोग्य है जब वह शुद्ध हृदय से की गई हो। 1 तीमुथि. 3:9

उपसंहार

जब आप परमेश्वर की सेवा उसके वचन के प्रचारक के रूप में करना चाहते हैं, तब ऐसा ही हो कि आप एक भंडारी के समान चिंता करने वाले हो, परमेश्वर के सत्य की घोषणा साहस के साथ करें, परमेश्वर की समार्थ के विश्वासयोग्य और खरे गवाह हो, आपका हृदय परमेश्वर की संतानों और खोये हुओं के प्रति एक पिता समान हो, और आप में एक सेवक जैसी सच्ची नम्रता हो।

उपदेशों का वर्गीकरण

प्रस्तावना

उपदेशों के विभिन्न प्रकार हैं। उपदेशों का वर्गीकरण उनके उद्देश्य, उनकी विषय-वस्तु, उनमें पवित्रशास्त्र के पाठ के उपयोग का तरीका, उन्हें प्रस्तुत करने की पद्धति, या उनकी बनावट के आधार पर किया जाता है। आइये प्रत्येक प्रकार को देखें।

1. उनके उद्देश्य के द्वारा - संदेश का उद्देश्य क्या है?

1.1. सुसमाचार-प्रचार

1.1.1. यह जिन्हें सुनाया जाता है वे अविश्वासी होते हैं।

1.1.2. इसका उद्देश्य यह होता है कि (परमेश्वर के आत्मा के द्वारा) उन्हें अपना हृदय परमेश्वर को देने के लिये मनाया जाये।

1.2. स्थापित करना

1.2.1. यह जिन्हें सुनाया जाता है वे नये विश्वास होते हैं।

1.2.2. इसका उद्देश्य यह होता है कि उन्हें परमेश्वर के वचन में सुदृढ़, सही और विकसित किया जाये।

1.3. सुसज्जित करना

1.3.1. यह जिन्हें सुनाया जाता है वे परिपक्व विश्वासी होते हैं।

1.3.2. इसका उद्देश्य यह होता है कि उन्हें मसीही सेवकाई के लिये तैयार किया जाये।

2. उनकी विषय-वस्तु के द्वारा

2.1. सैद्धांतिक - प्रचारक सिद्धांत के किसी एक मुद्दे पर बोलता है।

2.2. सुसमाचार-प्रचारीय - प्रचारक ऐसा संदेश देता है जो अविश्वासियों के लिये होता है।

2.3. आचार संबंधी - प्रचारक किसी नैतिक मुद्दे पर बोलता है।

2.4. बाइबल-पुस्तक - प्रचारक बाइबल की एक संपूर्ण पुस्तक का संक्षिप्त विवरण देता है।

2.5. थेअलोजिकल - प्रचारक किसी थेअलोजिकल (आध्यात्मविद्या संबंधी) विषय पर बोलता है।

2.6. शब्द अध्ययन - प्रचारक बाइबल के किसी एक शब्द पर विषयसंबंधी उपदेश देता है।

2.7. जीवन-वृत्तांतसंबंधी - प्रचारक बाइबल के किसी व्यक्ति के चरित्र पर उपदेश देता है।

2.8. जीवन परिस्थितिसंबंधी - प्रचारक जीवन के किसी वर्तमान मुद्दे पर उपदेश देता है।

3. उनमें पवित्रशास्त्र के पाठ का उपयोग करने के तरीके के द्वारा

3.1. व्याख्यात्मक - प्रचारक स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

3.2. उदाहरणदर्शक - प्रचारक कहानी बताने का प्रयास करता है।

3.3. तर्कसंगत - प्रचारक किसी मुद्दे का बाइबलीय पक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

3.4. प्रबोधक- प्रचारक श्रोताओं को कोई लागूकरण करने हेतु कायल करने का प्रयास करता है।

4. प्रस्तुत करने की पद्धति के द्वारा

4.1. हस्तलिखित - इस प्रकार में लिखा हुआ उपदेश पढ़ा जाता है।

4.1.1. उपदेश पढ़कर सुनाने से गारंटी होती कि उसमें की सूक्ष्म-सूक्ष्म बातें छुट नहीं जायेगी।

4.1.2. उपदेश पढ़कर सुनाने से समय की लम्बाई को नियंत्रण में रखने में सहायता होती है।

4.2. रटकर प्रस्तुत करना - उपदेश को रट लिया जाता है और रटा हुआ बोला जाता है।

4..2.1. रट कर बोलने से सूक्ष्मता की गारंटी होती है परंतु तैयारी में बहुत समय लगता है।

4.2.2. रट कर बोलने से आप श्रोताओं की ओर अधिक देखकर और स्वतंत्रता से हाव-भाव करके बोल सकते हैं।

4.3. तात्कालिक भाषण - उपदेश के सारे शब्द नहीं मात्र रूपरेखा लिखकर बोला जाता है।

4.3.1. बोलने की विषयवस्तु भली भांति लिखी गई रूपरेखा पर आधारित होती है।

4.3.2. रूपरेखा का होना विषय से भटकने से बचाता है।

4.3.3. रूपरेखा का होना व्यक्त करने की स्वतंत्रता और प्रस्तुत करने में प्रवाह प्रदान करता है।

4.4. अपूर्वचिंतित भाषण - पहले से तैयारी किये बिना ही उपदेश दिया जाता है।

4.4.1. यह तब आवश्यक हो सकता है जब पहले से सूचित ना किया गया हो।

4.4.2. इसका अर्थ एक ऐसा उपदेश देना है जिसकी पहले से कुछ तैयारी नहीं गई की थी।

5. बनावट के आधार पर

5.1. विषयसंबंधी - यह किसी एक मूल-विषय पर अधारित उपदेश होता है।

5.2. पाठ-विषयक - यह किसी शास्त्रपाठ के एक से तीन वचनों पर दिया गया उपदेश होता है।

5.3. व्याख्यात्मक - यह किसी लम्बे शास्त्रपाठ पर दिया गया उपदेश होता है।

उपसंहार

"यह बात प्राथमिक महत्व की है कि उपदेशक अपने उपयोग किये जाने वाले उपदेश के प्रत्येक प्रकार का स्पष्ट वर्गीकरण करने में समक्ष हो। यह महत्वपूर्ण है कि उपदेश अपनी विषय-वस्तु में बाइबलीय हो, प्रस्तुति में तर्कपूर्ण हो, लागूकरण में व्यावहारिक हो, और बनावट तथा प्रस्तुति में विविध हो।" (लॉयड एम. पेरी)

विषयसंबंधी उपदेश

1. वर्णन

1.1. विषयसंबंधी उपदेश एक ही विषय पर केंद्रित होता है।

1.2. विषय या तो बाइबल के किसी शास्त्रभाग से या वर्तमान परिस्थिति से लिया जाता है।

1.3. यह बाइबल के किसी एक ही शास्त्रभाग में सीमित नहीं होता है, परंतु उसी विषय से संबंधित अलग-अलग शास्त्रभागों का उपयोग किया जाता है।

1.4. इस प्रकार का प्रचार बहुतों के द्वारा पसंद किया जाता है और कुछ हद तक प्रभावकारी होता है।

2. लाभ

2.1. विषयसंबंधी उपदेशों से किसी विशिष्ठ मूल-विषय पर विस्तार से चर्चा हो सकती है।

2.2. वे बुद्धि को आकर्षित करते हैं।

2.3. ये संभवत: काम में लाने के लिये सब से सरल होते हैं क्योंकि इनमें अन्य प्रकार के उपदेशों के समान गहराई से बाइबलीय खोज तथा शास्त्रभाग का विश्लेषण करने की आवश्यकता नहीं होती है।

2.4. उपदेश में एकता बनाना सरल होता है क्योंकि इस पर किसी एक विशिष्ठ शास्त्रपाठ के सारे शब्दों का प्रतिबंध नहीं होता है।

2.5. इसमें संरचना की श्रेष्ठता संभव होती है। यदि कोई अति उत्तम साहित्यिक रचना बनाना चाहता है तो उस उद्देश्य से यह सर्वाधिक उपयुक्त होता है।

3. हानियां

3.1. विषयसंबंधी उपदेशों का झुकाव बाइबल की सच्चाइयों को अस्पष्ट या उपेक्षित बनाने की ओर होता है, क्योंकि पदों को उनके संदर्भ से हटाकर लिया जाता है।

3.2. ये बाइबल के बारे में मानवीय मतों को स्थान देने की संभावना को बढ़ाते हैं, क्योंकि इन में किसी एक शास्त्रभाग की स्पष्ट व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं होती है।

3.3. एक संभावित हानि यह है कि जो उपदेशक विषयसंबंधी उपदेशों का उपयोग करते हैं वे बार-बार कुछ मनपसंद विषयों पर ही उपदेश देते हैं और बाइबल की अन्य शिक्षाओं की उपेक्षा करते हैं।

3.4. इसलिये कि विषयसंबंधी उपदेश तैयार करना अन्य उपदेशों से सरल होता है, कुछ उपदेशक वचन का अध्ययन करने में आलसी और कच्चे रह जाते हैं।

4. उदाहरण

4.1. "परमेश्वर का राज्य"

4.2. "आत्मा के वरदान"

4.3. "क्या परमेश्वर चाहता है कि उसके बच्चे धनवान बनें?"

4.3.1. "धनवान" शब्द के अनेक अर्थ होते हैं।

4.3.2. हम आत्मिक धन से अधिक भौतिक धन के बारे में बातें क्यों करें? परमेश्वर के लिये यह अधिक महत्वपूर्ण है कि हम सम्पत्ति से अधिक आत्मा में धनवान हो।

4.3.3. यह विषय विषयसंबंधी उपदेश के लाभ और हानियों का एक अच्छा उदाहरण है।

4.3.4. कुछ उपदेशक, परमेश्वर में विश्वास करने के भौतिक और दुनियावी आशीषों पर अधिक जोर देंगे जबकि अन्य परमेश्वर में विश्वास करने के आत्मिक और अनंतकालिक आशीषों पर अधिक जोर देंगे।

विषयसंबंधी उपदेश का उदाहरण
मसीह का पुनरागमन - 1

1. मसीह के पुनरागमन का महत्व **1 थिस्सलु. 4:3-18**

1.1. उसके पुनरागमन का उल्लेख नया नियम के 260 अध्यायों में 318 बार हुआ है।

1.2. औसतन, प्रत्येक 25 पदों में से एक पद उसके पुनरागमन के बारे में बताता है।

1.3. पौलुस थिस्सलुनीके के विश्वासियों को तीन श्रेष्ठतम् बातों का स्मरण दिलाता है।

1.3.1. मसीह का पुनरागमन हमारे क्लेशों में सर्वश्रेष्ठ शांति है। यशायाह 40:1, 9-10

1.3.2. उसका पुनरागमन हमारे भविष्य के लिये सर्वश्रेष्ठ आशा है। तीतुस 2:13

1.3.3. यह पवित्र जीवन जीने के लिये सर्वश्रेष्ठ प्रेरणा है। 1 थिस्स. 3:13; 2 पतरस 3:11

1.3.4. उदाहरण: दो स्त्रियों में तुलना करना: एक स्त्री अपने पति के दूर रहने पर अन्य पुरुषों से इश्क करती करती है और दूसरी धीरज के साथ अपने पति के वापस आने का इन्तजार करती है।

2. मसीह के पुनरागमन की निश्चितता यूहन्ना 14:1-3

2.1. यीशु हमारे लिये जगह तैयार कर रहा है। यूहन्ना 14:2

2.2. यीशु वापस आयेगा। 1 थिस्स. 4:16

2.3. यीशु हमें अपने साथ ले जायेगा। 1 थिस्स. 4:17

2.4. हम सर्वदा उसके साथ रहेंगे। फिलि. 3:20-21

2.5. उसका आगमन भविष्य में होना है।

2.5.1. शारीरिक मृत्यु नहीं । 1 थिस्स. 4:16

2.5.2. पवित्र आत्मा का आगमन नहीं। फिलि. 3:20-21; 1 थिस्स. 4:17

2.5.3. यरूशलेम का विनाश नहीं। प्रकाशितवाक्य 22:20

3. मसीह के पुनरागमन का तरीका

3.1. वह स्वयं व्यक्ति रूप में आयेगा। मत्ती 24:23-31, 36-44; प्रेरितों 1:10-11

3.2. वह देह में होकर आयेगा और दिखाई देगा। इब्रा. 9:28

3.3. तीन अवस्थाएं होंगी

3.3.1. प्रभु के साथ हवा में मिलना। 1 थिस्स. 4:17

3.3.2. मसीह का पृथ्वी पर आगमन। जकर्याह 14:4-5; मत्ती 25:31-32; 1 थिस्स 3:13

3.3.3. महाक्लेश - यदि हो सके तो इससे बच जायें। लूका 21:36

3.4. वह सामर्थ और महिमा के साथ आयेगा। लूका 21:27

3.5. वह बादलों पर आयेगा। निर्गमन 19:9; 34:5; भजन 97:1-2; 104:3; मत्ती 17:5

3.6. वह स्वर्गदूतों के साथ आयेगा। मत्ती 16:27; मरकुस 8:38; 2 थिस्स. 1:17

3.7. उसका आना अचानक और अनपेक्षित होगा। लूका 21:34-36; 1 थिस्स. 5:2-3; प्रकाशित. 16:15

4. मसीह के पुनरागमन की तारीख

4.1. उसके आने का समय और दिन कोई नहीं जानता। मत्ती 13:32; 24:35,42

4.2. वह समय मात्र परमेश्वर पिता जानता है। प्रेरितों 1:6-7

4.3. शिष्य असचेत पाये जा सकते हैं। मत्ती 24:42-47

4.4. संसार के लोग अपने काम में व्यस्त होंगे, जैसे कि सब कुछ सामान्य है। लूका 17:26-30

4.5. यह "पाप का पुरुष" के आने के बाद होगा। 2 थिस्स. 2:2-4

4.6. उसके आगमन के दिनों का चिन्ह धर्म का त्याग होना होगा। 1 तीमुथि. 4:1; 2 तीमुथि. 5:1-13

4.7. यह किसी भी घड़ी हो सकता है। मरकुस 13:34-36

4.8. यह सब के मन परिवर्तन के पहले होगा। मत्ती 24:14; 2 थिस्स. 2:2-4,8; 2 तीमुथि. 3:1-5

5. मसीह के पुनरागमन के प्रति हमारी मनोवृत्तिः हमें ऐसे होना चाहिये-

5.1. जागरूक - सदैव तैयार। मत्ती 24:42; लूका 21:36-37

5.2. पवित्र - संसार से अलग। मत्ती 25:1-30

5.3. निश्चित - मसीह में स्थिर। 1 यूहन्ना 2:28

5.4. अभिलाषी - उसके आने की तीव्र इच्छा रखे हुये। 2 तीमुथि. 4:8; 2 पतरस 3:12

(शेष अगले पृष्ठ पर)

विषयसंबंधी उपदेश का उदाहरण
मसीह का पुनरागमन - 2

(पीछले पृष्ठ से आगे)

6. मसीह के पुनरागमन के परिणाम, निम्नलिखित लोगों के संबंध में...

6.1. परमेश्वर

6.1.1. परमेश्वर की महिमा पूर्ण रीति से प्रगट होगी। यशायाह 40:5

6.1.2. यीशु एक राजा की भूमिका में शासन करेगा। यिर्मयाह 23:5-6; मत्ती 25:31

6.2. कलीसिया

6.2.1. जो मसीह में सो रहे होंगे वे जिलाये जायेंगे। 2 कुरिंथि. 5:4-8; 1 थिस्स.4:15-16

6.2.2. हमारी देह मसीह की देह के समान बदल दी जायेगी। फिलि. 3:21; रोमि. 8:23

6.2.3. हमारी देह तारों की नाई चमकेगी। दानि. 12:3; मत्ती 13:43

6.2.4. विश्वासी, मरे हुये और जीवित, ऊपर उठा लिये जायेंगे। 1 थिस्स. 4:17

6.2.5. हम यीशु के समान होंगे। कुलु. 3:4; 2 थिस्स. 1:10; 1 यूहन्ना 3:2

6.2.6. हम मसीह के साथ विवाह बंधन में बंध जायेंगे। इफि. 5:31-32; प्रकाशित. 19:6-9

6.2.7. हमें धर्म का मुकुट प्राप्त होगा। मत्ती 16:27; 2 तीमुथि 4:7-8

6.2.8. प्राचीनों को महिमा का मुकुट प्राप्त होगा। 2 कुरिंथि 5:10; 1 पतरस 5:2-4

6.2.9. परमेश्वर के लोग उसके साथ राज्य करेंगे। प्रकाशित. 5:9-10; 20:4 6.3. इस्राएल

6.3.1. वे उसके लिये विलाप करेंगे जिसे उन्होंने बेधा था। जकर्याह 12:10

6.3.2. बचे हुये लोग पुन: स्थापित किये जायेंगे। जकर्याह 13:1,7

6.3.3. यरूशलेम नगरी सुरक्षित होगी। जकर्याह 14:11

6.3.4. तितर-बितर लोग एकत्रित किये जायेंगे। सपन्याह 3:20; यशा. 11:12; यहेजकेल 36:24; 37:21

6.3.5. इस्राएल और यहूदा का उद्धार होगा। यिर्मयाह 23:5-6; रोमियों 11:26-32

6.3.6. वे एक किये जायेंगे। यहेजकेल 37:23

6.3.7. उनके हृदय परिवर्तित हो जायेंगे। यिमर्यायाह 31:33-34; यहेजकेल 37:26

6.3.8. वे जातियों में परमेश्वर की महिमा की घोषणा करेंगे (पौलुस के समान) यशायाह 66:19

6.4. समाज

6.4.1. वे उसके लिये रोएंगे जिसे उन्होंने बेधा था। मत्ती 24:30; प्रका. 1:7

6.4.2. सब जातियों का न्याय किया जायेगा। मत्ती 25:31-32; प्रका. 20:12

6.4.3. सब जातियों में से लोग बचाये जायेंगे। यशायाह 2:2-3; जकर्याह 8:22; प्रेरितों 15:16-20

6.4.4. विरोधियों का न्याय होगा और अनंतकाल के लिये दण्ड पायेंगे। भ.सं. 2:9; यहू. 15; 2 थिस्स. 1:8-9

6.4.5. जगत अपने वैध स्वामी की ओर लौट आयेगा। प्रकाशित. 11:15

6.4.6. जो बचे होंगे वे उसके आगे घुटने टेकेंगे और उसकी आराधना करेंगे। यशा. 11:11; जर्क.9:10; 14:16; प्रका. 15:4

6.4.7. युद्ध रूक जायेंगे और शांति राज्य करेगी। यशा. 2:2,4; मीका 4:3-4

6.4.8. सारी पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से भर जायेगी। यशा. 11:2-5,9

6.5. मसीह-विरोधी दूर किया जायेगा। 2 थिस्स. 2:3-4, 7-8; प्रका. 19:20

6.6. शैतान अथाह कुण्ड में डाल दिया जायेगा, 1000 वर्ष बाद छोड़ा जायेगा तब अंतत: आग की झील में डाला जायेगा। प्रका. 20:1-3,7,10

6.7. सृष्टि

6.7.1. सृष्टि भ्रष्टता से छुड़ाई जायेगी। यशा. 32:15; 35:1-2; 55:12-13; 65:25

6.7.2. तब नया आकाश और नयी पृथ्वी होगी। 2 पत. 3:12-13; प्रका. 21:1-5

उपसंहार

- उसका पुनरागमन महत्वपूर्ण है, निश्चित है और सुस्पष्ट है।
- जो यीशु को नहीं जानते उनके लिये परिणाम विनाशक होंगे।
- हम उसके आने की तारीख नहीं जानते, परंतु हम समय को पहचान सकते हैं।
- हमारी मनोवृत्ति तैयारी की, चौकस रहने की, पवित्रता की, आग्रही और तीव्र इच्छा की होनी चाहिये।
- "आमीन! हे प्रभु यीशु आ।।"

पाठ-विषयक उपदेश

1. पाठ-विषयक उपदेश का वर्णन

1.1. पाठ-विषयक उपदेश वह होता है जिसमें बाइबल के किसी पाठ को सावधानी से समझाया जाता है।
1.2. लिया गया शास्त्रपाठ ही उपदेश का विषय तथा उसके लिये विभाग प्रस्तुत करता है।
1.3. पाठ की लम्बाई एक से तीन वचन होती है।
1.4. पाठ का बुनियादी मूल-विषय पूरे उपदेश में प्रतिबिंबित होता है।
1.5. उपदेश के विभाग पाठ के भीतर के ही महत्वपूर्ण शब्दों तथा वाक्यांशों के द्वारा सुझाये जाते हैं।
1.6. वे पाठ में से ही निकाले जाते हैं और पूरे पाठ के विश्लेषण को निर्माण करते हैं।
1.7. वे परस्पर ऐसे संबंधित होने चाहिये कि वे उपदेश में एकता प्रदर्शित करते हों।

2. पाठ-विषयक उपदेश के विशिष्ठ लक्षण

2.1. पाठ में पाये जाने वाले मूलभुत विचार ही विभागों के लिये विषय-वस्तु निर्धारित करते हैं।
22. विषय-वस्तु के विभिन्न विभाग पाठ में सिखाये गये सत्य से आगे नहीं जाते हैं।
2.3. यह संदेश उपदेशक को अधिकार प्रदान करता है क्योंकि वह पवित्रशास्त्र के शब्दों पर आधारित होता है।
2.4. पाठ का चुनाव करने का कौशल्य होना आवश्यक है ताकि निश्चित किया जा सके कि उसे पाठ-विषयक उपदेश के लिये काम में लाया जा सकता है: शास्त्रभाग पर प्रश्न किया जाये कि क्या इसमें पर्याप्त सामग्री है जिससे सत्य का भरपूर विकास किया जा सकेगा?
2.5. पाठ-विषयक संदेश चुने गये पाठ की ध्यानपूर्वक की गयी व्याख्या पर आधारित होता है, इससे सत्य का ऐसा स्पष्ट संभावित प्रस्तुतिकरण किया जा सकता है जिसमें व्यक्तिगत पूर्वधारणाओं की मिलावट नहीं होती है।
2.6. पाठ को रूपरेखा में, उपदेशक के समांतर विचारों के द्वारा व्यक्त किया जाना चाहिये।

3. लाभ

3.1. इस पद्धति के द्वारा बाइबल का प्रत्येक महत्वपूर्ण विषय संभव है।
3.2. इस प्रकार के बाइबलीय प्रचार के द्वारा, उपदेशक तथा श्रोता दोनों को लाभ होता है।
3.3. इसलिये कि पाठ-विषयक उपदेश में अधिकतम् मात्र एक से तीन पदों का ही उपयोग किया जाना चाहिये, सत्य के एक ही पहलू पर ध्यान सकेंद्रित हो सकता है जिससे लोगों की सहायता होती है।
3.4. उपदेश करने का यह प्रकार उपदेशक को अपने मुद्दों में दुहराव करते रहने से बचाता है।
3.5. यह कलीसिया के लिये संभव करता है कि बाइबल में उस पाठ को खुला रख कर संदेश को सुने।
3.6. पवित्रशास्त्र के अनेक अलग-अलग भागों को देखने से अधिक सरल होता है कि एक ही भाग पर ध्यान से सुनें।
3.7. यह संभव बनाता है कि लागूकरण को अधिक सुस्पष्ट बनाया जाये।
3.8. पाठ-विषयक उपदेश सुनने वालों को शास्त्रपाठ से दूर नहीं परंतु शास्त्रपाठ में ले जाते हैं।

4. पाठ-विषयक उपदेश की रूपरेखा के उदाहरण

4.1. यूहन्ना 1:12 – मसीह को ग्रहण करना
  4.1.1. व्यक्तिगत रीति से ग्रहण करना
  4.1.2. ग्रहण करने के परिणाम
  4.1.3. ग्रहण करने का तरीका
4.2. प्रेरितों 11:23 – परमेश्वर का अनुग्रह
  4.2.1. परिस्थिति – उसने क्या देखा
  4.2.2. प्रतिक्रिया – उसे क्या लगा
  4.2.3. परामर्श – उसने क्या कहा
4.3. इब्रानियों 12:14 –जीवन के लिये परमेश्वर का नमूना
  4.3.1. उसकी शांति – परमेश्वर की अगुवाई के माध्यम से: मार्ग
  4.3.2. उसकी पवित्रता – परमेश्वर की उपस्थिति में: परिपूर्णता
  4.3.3. उसकी प्रतिज्ञा – परमेश्वर के पक्ष में: अनंत जीवन
4.4. इब्रानियों 12:14 – परमेश्वर को देखने की शर्त
  4.4.1. महिमामय आशा – धीरज (लक्ष्य, उपहार, महिमा)
  4.4.2. महिमामय प्रबन्ध – पवित्रता (संभाव है, व्यावहारिक है, लाभदायक है)
  4.4.3. भयंकर खतरा – पवित्रता के बिना (परमेश्वर की मांग पूरी नहीं होगी, परमेश्वर जो कर सकता है उसमें रूकावट आयेगी, परमेश्वर जो देना चाहता है उसे खो देंगे)

पाठ-विषयक उपदेश

मेल कर लिया जाना - 1

कुलुस्सियों 1:21-22

प्रस्तावना

- इस पत्री का मूल-विषय यह है कि पुत्र की सारी महिमा सारे संतों (विश्वासियों) के लिये उपलब्ध है।
- इस शास्त्रभाग का मूल-विषय है, परमेश्वर से मेल हो जाना।
- यह शास्त्रभाग हमें स्पष्ट बतता है कि "स्वर्ग के लिये पासपोर्ट" पाने के लिये आवेदन कैसे करें।
- मैं आपको परमेश्वर की संतान बनने के लिये आर्मंत्रित करता हूं।

1. मेल कर लिये जाने की आवश्यकता - प्रत्येक को इसकी आवश्यकता है।

1.1. मसीह के बिना कोई भी मनुष्य स्वर्ग के लिये पराया (विदेशी, अजनबी और बाहर का) है।

1.1.1. पाप के कारण, मनुष्य ने स्वर्ग की नागरिकता को खो दिया है; मनुष्य परमेश्वर के साथ के संबंध से बाहर निकाला गया है।

1.1.1.1. अदन की बाग में, मनुष्य का आरंभ एक बाहरी जन के रूप में नहीं हुआ था।

1.1.1.2. परंतु उसने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया; उसने परमेश्वर से अलग होने का प्रयत्न किया और परमेश्वर के द्वारा स्पष्ट रीति से दिये गये निर्देशों को नहीं माना।

1.1.1.3. जब मनुष्य ने पाप किया तब उसने परमेश्वर के साथ की संगति को भंग कर दिया।

1.1.1.4. पाप के कारण, वह अदन की बाग से बाहर निकाल दिया गया और पराया या बाहरी हो गया।

1.1.2. यह निकाल दिया जाना एक आवश्यक न्यायिक कार्यवाही थी।

1.1.2.1. मनुष्य के पाप के कारण, परमेश्वर को हमें अपने से दूर करना ही था।

1.1.2.2. हमारे बुरे कामों ने परमेश्वर जो न्यायाधीश है उसे क्रोध दिला दिया।

1.1.2.3. हमने स्वेच्छा से और जानबूझकर उसकी आज्ञा को नहीं माना।

1.1.3. इसी रीति से, मेल कर लिया जाना यह एक आवश्यक न्यायिक कार्यवाही है।

1.1.3.1. यदि पहले से स्थापित शर्तों को पूरा किया जाये तो परमप्रधान परमेश्वर हमें विशेष अधिकार देता है।

1.1.3.2. वह हमारे विशेष अधिकारों को वापस ले लेता है यदि पहले से स्थापित शर्तों को तोड़ दिया जाये।

1.1.4. मनुष्य भले कामों के द्वारा परमेश्वर के साथ का संबंध पुनः स्थापित नहीं कर सकता, इन भले कामों के द्वारा भी नहीं जैसे कि,

1.1.4.1. बाइबल पढ़ना

1.1.4.2. प्रार्थना करना

1.1.4.3. चर्च में या आराधना में जाना

1.1.4.4. दया और सेवा के काम करना

1.1.4.5. आर्थिक सहायता करना

1.2. पाप के परिणामस्वरूप, मनुष्य परमेश्वर का बैरी बन गया।

1.2.1. मनुष्य की मनोवृत्ति विद्रोह की है: वह परमेश्वर से घृणा करता है क्योंकि परमेश्वर पाप से घृणा करता है।

1.2.1.1. परमेश्वर का न्याय विद्रोही मनुष्य को घृणास्पद लगता है।

1.2.1.2. परमेश्वर का क्रोध विद्रोही मनुष्य को घृणास्पद लगता है।

1.2.1.3. परमेश्वर की पवित्रता भ्रष्ट मनुष्य को घृणास्पद लगती है।

1.2.1.4. परमेश्वर की धार्मिकता अधार्मिक मनुष्य को घृणास्पद लगती है।

1.2.1.5. परमेश्वर की शुद्धता अशुद्ध मनुष्य को घृणास्पद लगती है।

1.2.2. परमेश्वर की मनोवृत्ति मेल कर लेने की है: परमेश्वर मनुष्य को मेल प्रदान करता है।

1.2.2.1. बहस नहीं – मनुष्य परमेश्वर के साथ लेन-देन की बहस नहीं कर सकता, परंतु परमेश्वर मनुष्य के पास पहुंचता है।

1.2.2.2. मेल नहीं – मनुष्य का परमेश्वर के साथ मेल नहीं है, परंतु परमेश्वर मसीह की मृत्यु के द्वारा मेल प्रदान करता है।

1.2.2.3. बहाना नहीं – मनुष्य के पास परमेश्वर के सामने रखने के लिये कोई बहाना नहीं है, परंतु परमेश्वर अपना अनुग्रह प्रदान करता है

1.2.3. दो भिन्न मापदण्ड हैं:

1.2.3.1. मनुष्य क्रियाकलापों को दो बदलती हुई श्रेणियों में विभाजित करता है: आदरणीय और अश्लील

1.2.3.2. परमेश्वर क्रियाकलापों को दो न बदलने वाली श्रेणियों में विभाजित करता है: सब क्रियाकलाप जो परमेश्वर में और परमेश्वर के लिये किये जाते हैं वे भले हैं; सब क्रियाकलाप जो परमेश्वर से बाहर के हैं वे बुरे हैं।

1.2.4. मनुष्य का पाप में रहते हुये परमेश्वर से मेल नहीं हो सकता है; मनुष्य का मेल पवित्रता में होना अवश्य है।

1.2.5. पाप में बने रहना है परमेश्वर से बैर है: मनुष्य परमेश्वर की रचना है, परंतु उसे अस्तित्व में होने का अधिकार नहीं है।

पाठ-विषयक उपदेश

मेल कर लिया जाना - 2

1. मेल कर लिये जाने का प्रावधान

2.1. मनुष्य की दशा

2.1.1. मनुष्य परमेश्वर के साथ की सिद्ध संगति को जानता था।

2.1.2. मनुष्य अपने विद्रोह के कारण परमेश्वर से अलग कर दिया गया।

2.1.3. मनुष्य अपने आप मात्र बुरे ही काम कर सकता है।

2.2. यीशु मसीह की दशा

2.2.1. यीशु परमेश्वर के साथ की सिद्ध संगति को जानता है।

2.2.2. यीशु अपने पिता के साथ के संबंध में घनिष्टता से जुड़ा हुआ है।

2.2.3. यीशु मात्र भले ही काम करता है।

2.3. यीशु का मात्र जीवन ही मेल कर लिये जाने का प्रावधान नहीं है।

2.3.1. यीशु का मात्र देहधारण कर आना ही अपने आप में पर्याप्त नहीं है।

2.3.2. यीशु की मात्र शिक्षाएं ही अपने आप में पर्याप्त नहीं है।

2.4. यीशु की मृत्यु हमारे मेल कर लिये जाने को संभव बनाने का प्रावधान करती है।

2.4.1. यीशु की मृत्यु का मूल्य/महत्व अनंत है क्योंकि यीशु का व्यक्तित्व अनंत है।

2.4.1.1. भूतकाल में मूल्य: मैंने उद्धार पाया।

2.4.1.2. वर्तमान में मूल्य: मेरा उद्धार किया जा रहा है।

2.4.1.3. भविष्य में मूल्य: मेरा उद्धार किया जायेगा।

2.4.2. वह ईश्वरीय तरीके से मानवीय मृत्यु है: पिता का अनुग्रह और महिमा देह में प्रगट हुई थी।

2.4.3. वह मृत्यु किसी और के बदले में हुई: पापी का दण्ड उस पर पड़ा जिसमें कोई पाप नहीं था।

2.4.4. वह मृत्यु पुन:निर्माण करने वाली है: मनुष्य को उसकी मूल दशा में पुन: स्थापित कर लिया जाना संभव हो गया है।

2.4.5. वह व्यक्तिगत मृत्यु है: हमें पुन: स्थापित किया गया है इसका प्रमाण यह है कि अब हम परमेश्वर के साथ वार्तालाप करते हैं और परमेश्वर के बारे में वार्तालाप करते हैं।

3. मेल कर लेने का लक्ष्य

3.1. दो पहलु

3.1.1. हमें धर्मी ठहराया जाना **1 यूहन्ना 1:9**

3.1.1.1. हमारे पापों की क्षमा

3.1.1.2. हम धर्मी बनाया जाना

3.1.1.3. हमें ग्रहण किया जाना

3.1.2. हमारा पवित्रीकरण इब्रानियों 12:14

3.1.2.1. हमें शुद्ध किया जाना

3.1.2.2. हमारा पाप को त्यागना

3.1.2.3. हमारा सांसारिक मूल्यों तथा व्यवहारों से अलग होना

3.1.2.4. हमारी सिद्धता: "निर्दोष" फिलिप्पियों 2:15

3.2. दो परिणाम

3.2.1. न्यायिक (कानूनी): हमारी दशा मसीह में होकर भिन्न हो गई है।

3.2.2. अनुभवकारी: हमारा चरित्र मसीह में परिवर्तित हो गया है।

उपसंहार

1. तीन प्रतिज्ञाएं: परमेश्वर की जिम्मेवारी — 2 कुरिंथि 6:16
   - परमेश्वर आपके साथ निवास करेगा: "मैं उनमें बसूंगा"
   - परमेश्वर आपके लिये कार्य करेगा: "मैं उनमें चला फिरा करूंगा"
   - परमेश्वर आप पर शासन करेगा: "मैं उनका परमेश्वर हूंगा"
2. तीन शर्तें: मनुष्य की जिम्मेवारी
   - समर्पण: "वे मेरे लोग होंगे"
   - प्रस्थान: "उन के बीच में से निकलो..."
   - अलगाव: "और अलग रहो।"

पाठ-विषयक उपदेश
एक दूरदर्शी की परमेश्वर से प्रार्थना
1 इतिहास 4:9,10

प्रस्तावना

- याबेस ने चेलों की एक पाठशाला स्थापित की थी (परंपरा के अनुसार ऐसे माना जाता है।)
- उसके नाम से एक शहर का नाम रखा गया (1 इतिहास 2:55)।
- प्रार्थना के संबंध में उचित समझ यही इस शास्त्रभाग की कुंजी है।
- याबेस के नाम का अर्थ है: "वह जो पीड़ा देता है"
- याबेस ने अपनी प्राथमिकताओं को सही स्थान में रखा था।
- वह अपनी प्रार्थना के लिये जाना गया।

1. व्यक्तिगत आशीषें

   1.1. उसने परमेश्वर की आशीषों को मांगा - परमेश्वर से आशीषों को मांगना यह कोई गलत बात नहीं है।

   1.2. उसने परमेश्वर से मांगा की उसे आशीष दे - इसमें कोई स्वार्थ नहीं है; परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देने में आनंदित होता है।

2. उसकी सीमाओं को बढ़ाया जाना

   2.1. याबेस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके देश की सीमाओं को बढ़ाता। इसका अर्थ मात्र यह नहीं है कि हमारे पास कितनी भूमि है, हमारी सीमाएं हमारा कार्य और सेवकाई की जिम्मेवारियां हो सकती हैं।

   2.2. हमारे क्षेत्र हमारी सीमाओं के द्वारा सीमित रहते हैं, परमेश्वर के द्वारा नहीं।

3. ईश्वरीय उपस्थिति

   3.1. याबेस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर का हाथ उसके साथ रहता। उसने पहचाना कि हम अपने ही प्रयासों से सफल नहीं हो सकते।

   3.2. यदि परमेश्वर हमारे साथ है तो हमारे विरुद्ध कौन हो सकता है?

4. सुरक्षा

   4.1. याबेस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे बुराई से बचा रखता। उसने यह पहचाना कि हम परमेश्वर के बिना जीवित बच नहीं सकते।

   4.2. याबेस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर पीड़ा से उसकी रक्षा करता।

4.2.1. शारीरिक सुरक्षा: अच्छी सेहत से सेवा और बेहतर सेवकाई के लिये ताकत का भरोसा होता है।

4.2.2. आत्मिक सुरक्षा: याबेस अपने परमेश्वर के समान पवित्र बने रहना चाहता था।

उपसंहार

1. परमेश्वर इस प्रार्थना को आशीष देगा।
2. इस प्रार्थना के द्वारा युद्ध जीता गया।
3. इस प्रार्थना के कारण याबेस को प्रतिष्ठा मिली।
4. याबेस के चेलों की संख्या का बढ़ना इसी प्रार्थना का परिणाम है।
5. आज आपकी प्रार्थना क्या है?

व्याख्यात्मक उपदेश

1. व्याख्यात्मक उपदेशों का वर्णन

1.1. व्याख्यात्मक उपदेश लम्बे शास्त्रपाठ पर आधारित होते हैं (4 पदों से लेकर कभी-कभी संपूर्ण अध्याय पर)।

1.2. ये उपदेश उस शास्त्रपाठ को स्पष्ट करने का प्रयास एक संक्षिप्त, सर्वसमावेशी मूल-विषय के द्वारा करते हैं जिसका समर्थन विभिन्न मुख्य बिन्दुओं के द्वारा किया जाता है।

1.3. ये लोगों के जीवन को लागू किये जा सकते हैं।

2. व्याख्यात्मक उपदेशों के गुण

2.1. इस उपदेश का मूल-विषय उस शास्त्रभाग के मुख्य विषय पर आधारित होता है।

2.2. सारे मुख्य बिन्दु उसी पाठ में से उभरकर आने चाहिये।

2.3. उस शास्त्रपाठ में विचारों की एकता होनी चाहिये, और वही एकता उसके उपदेश की रूपरेखा में बनाये रखी जानी चाहिये।

2.4. उपदेश का लक्ष्य एक ही होता है; उसे ही मूल-विषय के द्वारा व्यक्त किया जाना चाहिये।

2.5. रूपरेखा में क्रमानुसार वृद्धि होनी चाहिये, और इसके लिये उस शास्त्रपाठ में पायी जाने वाली सामग्री को पुनः क्रमानुसार सजाने की आवश्यकता हो सकती है।

2.6. यह प्रकार पाठ-विषयक उपदेश से ऐसे भिन्न होता है कि यह तीन से अधिक पदों पर बनाया जाता है, जिन्हें एक परिच्छेद के रूप में लिया जा सकता है; उसमें एक ही प्रमुख विचार लिया जाता है, जो रूपरेखा के विभागों के द्वारा एक तर्कपूर्ण वृद्धि प्रदान करता है।

3. व्याख्यात्मक उपदेशों के लाभ

3.1. यह सत्य को बताने का सब से सामान्य तरीका है: स्पर्जन कहते हैं: "यदि हम एक के बाद एक पदों को यहां-वहां से बलपूर्वक निकालते हैं और उन्हें बिना किसी पद्धति के प्रदर्शित करते हैं तो हम अपेक्षा नहीं कर सकते कि हम पवित्र शास्त्रपाठों की बहुत-सी शिक्षा दे पायेंगे। यह प्रक्रिया बहुत अधिक उसी बात के समान होगी कि हम ईंटों को अलग-अलग प्रदर्शित करते हुये कह रहे हैं कि हम घर दिखा रहे हैं।"

3.2 व्याख्यात्मक उपदेश का प्रकार लोगों के लिये परमेश्वर के वचन का ऐसा विस्तृत ज्ञान प्रस्तुत करता है जिससे वह समझने योग्य बन जाता है।

3.3. यह उपदेशक की सहायता करता है कि ऐसे नाजूक, संवेदनशील विषयों पर भी बोल सके जो अन्यथा अप्रसन्न करने वाले या आक्रमक लगेंगे यदि शास्त्रभाग के संदर्भ के अंतर्गत ना बताये जाये।

3.4. इमानदारी से की गई व्याख्या, जो निष्पक्ष अध्ययन होती है, इस बात में सहायक ठहरती है कि उपदेशक को सत्य के संबंध में अपनी व्यक्तिगत पूर्वधारणाओं को बताने से बचाती है।

4. व्याख्यात्मक उपदेशों के प्रकार

4.1. परिच्छेद: ऐसे अनेक वचनों पर आधारित संदेश जो एक साथ लेने के लिये उपयुक्त होते हैं।

4.2. पुस्तक:

4.2.1. इसमें, बाइबल की किसी पूरी पुस्तक का सर्वेक्षण एक ही उपदेश में दिया जा सकता है, या फिर उस पुस्तक पर उपदेशों की शृंखला हो सकती है।

4.2.2. उपरोक्त दूसरे प्रकार में, अर्थात् उपदेशों की शृंखला में, प्रत्येक संदेश अपने आप में पूरा होना चहिये जो अन्य भागों पर निर्भर ना हो।

4.2.3. अगला उपदेश समझने के लिये यह आवश्यक ना हो कि लोगों ने उसके पहले का उपदेश सुना हो।

42.4. प्रत्येक उपदेश अपने आप में एक पृथक भाग होना चाहिये, तथापि उसके पहले और अगले उपदेश से संबंधित होना चाहिये।

4.3. जीवन-वृत्तांत संबंधी

4.3.1. यह किसी एक व्यक्ति जैसे कि मूसा, दाऊद या पौलुस पर एक उपदेश हो सकता है, या उपदेशों की शृंखला हो सकती है।

4.3.2. यह बहुत ही लाभदायक हो सकता है कि जिन लोगों को कम जाना जाता है उन पर व्याख्यात्मक उपदेश दिया जाये, जैसे कि, बरनबास, स्तिफनुस या थोमा।

4.4. दृष्टांत: "स्वर्गीय कहानियां जिनमें पृथ्वी पर के जीवन के लिये लागूकरण है।"

4.5. आश्चर्यकर्म: बाइबल में लिखित आश्चर्यकर्म जिनका स्पष्टीकरण मानवीय या वैज्ञानिक तरीके से नहीं हो सकता।

4.6. घटनायें:

4.6.1. विशिष्ठ घटनायें, जैसे कि, "यीशु की परीक्षा" या "पौलुस का मन-परिवर्तन"

4.6.2. पुराना नियम के आश्चर्यकर्मों का संबंध संपूर्ण बाइबल के विस्तृत सत्य से जोड़ा जाना चाहिये।

4.7. सैद्धांतिक: मसीह का ईश्वरत्व, प्रायश्चित, पुन:रुत्थान, धर्मी ठहराया जाना, पवित्रीकरण, पवित्र आत्मा की सेवकाई, और मसीह का द्वितिय आगमन ऐसे कुछ विषय उत्तम व्याख्यात्मक उपदेश हो सकते हैं यदि उनसे संबंधित सही शास्त्रभाग को चुन कर बनाये जाये।

व्याख्यात्मक उपदेश की तैयारी

1. व्याख्यात्मक उपदेश तैयार करने के लिये सलाह

1.1. इस प्रकार के उपदेशों का उपयोग करने के लिये आरंभ में ऐसे शास्त्रपाठ चुनें जो सरलता से समझे जा सकते हैं।

1.2. बाद में, उन शास्त्रपाठों को लीजिये जिनके लिये अधिक गहराई का व्याख्यात्मक अध्ययन आवश्यक होगा।

1.3. यदि संभव हो तो जिस पुस्तक से वह शास्त्रभाग लिया गया है उसे पूरा पढ़िये ताकि उसके संदर्भ के महत्व को पूरी रीति से समझा जा सके।

1.4. प्रत्येक शब्द और शब्दांश पर अध्ययन में विचार किया जाना चाहिये।

1.5. प्रस्तुत करने के लिये शास्त्रपाठ चुनने में सावधानी से ध्यान दीजिये; उस पाठ को बार-बार और बार-बार पढ़िये ताकि आपका मन-मस्तिष्क उसकी विषय-वस्तु से भर जाये।

1.6. इसके साथ ही प्रार्थना और पवित्र आत्मा की अगुवाई को खोजना करते रहिये। इस प्रकार उस शास्त्रपाठ पर किया गया आधे घंटे का या उससे अधिक का मनन फलदायक परिणाम उत्पन्न करेगा।

1.7. आपको इस बात से आश्चर्य होगा कि बिना किसी टीका की सहायता के परमेश्वर का आत्मा आप पर कितना अधिक प्रगट करता है।

1.8. संपर्ण शास्त्रपाठ को एक जानकर विचार कीजिये।

1.9. बाद में, उसके स्वाभाविक विभागों को खोजिये जो सुधार करते-करते आपकी रूपरेखा के मुख्य बिन्दु बन जायेंगे।

1.10. जब आप किसी अन्य सहायता के बिना उस परिच्छेद का अध्ययन करते हैं, तब आपकी खोज आपकी अपनी होगी और आपके उपदेश में ताजगी और जीवन उपलब्ध करायेगी।

1.11. जब उस पाठ का यह आरंभिक अध्ययन पूरा हो जायेगा तब बाइबल अध्ययन पुस्तकों का उपयोग कीजिये ताकि आपके अध्ययन में वृद्धि की जा सके।

1.12. अपनी अध्ययन की गई सामग्री को, एक-के-बाद-एक वचन की टीका देने के बजाय, धर्मोपदेशकला के ढांचे के अनुसार क्रमानुसार सजाइये।

1.13. उपदेश के प्रमुख बिन्दुओं की क्रमागत वृद्धि को जांच लीजिये।

1.14. अपनी कलीसिया की आत्मिक, नैतिक तथा आचार-संबंधि आवश्यकताओं को संबोधित कीजिये। शास्त्रपाठ की सच्चाइयों का लागूकरण हमेशा किया ही जाना चाहिये।

2. व्याख्यात्मक उपदेश के लिये रूपरेखा

2.1. मूल-विषय: परमेश्वर के लिये जिलाये गये — इफिसियों 2:1-10

2.2. लक्ष्य: उद्धार का मार्ग दिखाना

2.3. रूपरेखा:

2.3.1. मनुष्य की पापमय दशा

2.3.1.1. अपराधों और पापों के कारण मरे हुये

2.3.1.2. संसार की रीति पर चलने वाले

2.3.2. छुटकारे का मार्ग

2.3.2.1. नकारात्मक पहलु

2.3.2.2. सकारात्मक पहलु

2.3.3. उद्धार की आशीष

2.3.3.1. मसीह के साथ संगति

2.3.3.2. भले कामों का जीवन

2.3.3.3. भविष्य की महिमा

3. व्याख्यात्मक उपदेश की एक और रूपरेखा

3.1. आज की कलीसिया पर एक अभियोग - प्रकाशितवाक्य 3:14-22

3.1.1. दोष - "मैं तेरे कामों को जानता हूं"

3.1.2. उपाय - "मैं तुझे सम्मति देता हूं... मुझ से मोल ले"

3.1.3. आमंत्रण - "सरगर्म हो और मन फिरा"

3.1.4. पुरस्कार - "जो जय पाये मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा।"

व्याख्यात्मक - बहु-दृष्टिकोणीय उपदेश

1. बहु-दृष्टिकोणीय उपदेश का वर्णन

1.1 परमेश्वर ने उपदेश के इस प्रकार का उपयोग अनेक पास्टरों की सेवकाई को क्रांतिकारी बनाने के लिये किया है।

1.2. इस प्रकार में, लिये गये शास्त्रपाठ पर पहले पाठकों के दृष्टिकोण से चर्चा की जाती है।

1.3. उसके बाद उस शास्त्रपाठ पर, उसमें के प्रत्येक व्यक्ति या समूह के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाता है।

1.4. वह शास्त्रपाठ प्रत्येक के संबंध में क्या कहता है? वे क्या अनुभव, विचार, संवदेना या विश्वास करते हैं?

2. बहु-दृष्टिकोणीय उपदेश के उदाहरण

2.1. एक शास्त्रपाठ पर चार बहु-दृष्टिकोणीय उपदेश प्रेरितों के काम 8:26-40

2.1.1. फिलिप्पिुस: प्रभावकारी गवाह बनने की शर्तें

2..1.1.1. उसे पवित्र आत्मा की अगुवाई के अनुकुल काम करना चाहिये। प्रेरितों 8:26,27,29,30

2.1.1.2. उसे युक्तिपूर्ण रीति से आगे बढ़ना चाहिये। प्रेरितों 8:30

2.1.1.3. उसे पवित्रशास्त्र का उपयोग करना चाहिये। प्रेरितों 8:32-35

2.1.1.4. उसे यीशु को प्रस्तुत करना चाहिये। प्रेरितों 8:35

2.1.1.5. उसे काम को पूर्णता की ओर ले जाना चाहिये। प्रेरितों 8:37-38

2.1.2. कूश देश का खोजा: उद्धार की ओर कदम बढ़ाने वाला

2..1.2.1. अवश्य है कि वह सत्य जानने के लिये खुला। प्रेरितों 8:28,31

2.1.2.2. आवश्यक है वह बताये जाने वाले वचन को समझे। प्रेरितों 8:30

2.1.2.3. आवश्यक है कि वह विश्वास करे। प्रेरितों 8:37

2.1.2.4. आवश्यक है कि वह आज्ञा का पालन करे। प्रेरितों 8:38

2.1.3. पवित्र आत्मा: पवित्र आत्मा की अगुवाई

2.1.3.1. उसने फिलिप्पुस की अगुवाई उस स्थान तक की। प्रेरितों 8:26,29

2.1.3.2. उसने फिलिप्पुस की अगुवाई उस व्यक्ति तक की। प्रेरितों 8:29,30

2.1.3.3. उसने पवित्रशास्त्र के वचन में फिलिप्पुस की अगुवाई की। प्रेरितों 8:35

2.1.3.4. उसने फिलिप्पुस की अगुवाई एक खुशनुमा परिणाम की ओर की। प्रेरितों 8:39

2.1.4. उद्धार को खोजने वाला: मार्ग से जाते-जाते सहायता

2.1.4.1. पवित्र आत्मा प्रेरितों 8:29

2.1.4.2. पवित्रशास्त्र प्रेंरितों 8:28-33

2.1.4.3. आत्मा-जीतने वाला प्रेरितों 8:30,35,37,38

2.2. एक शास्त्रपाठ पर चार बहु-दृष्टिकोणीय उपदेशों का एक और उदाहरण

2.2.1. शमूएल: उसकी आत्मिक विशेषताएं 1 शमूएल 12

2.2.1.1. उसकी ईमानदारी 1 शमूएल 12:4

2.2.1.2. उसकी बुलाहट के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता: वह लोगों से तर्क करता है, उन्हें सुधारता है, प्रोत्साहन देता है, चेतावनी देता है और शांति प्रदान करता है। 1शमूएल 7,17,20,25

2.2.1.3. उसका अपने लोगों के प्रति समर्पण 1 शमूएल 12:23

2.2.2. शाऊल: एक अगुवे के लिये तीन मनन

2.2.2.1. वह व्यक्ति जिसके पीछे वह चल रहा है: धर्मपरायण तथा प्रार्थना में उत्साही 1 शमूएल 12:5,18

2.2.2.2. वे लोग जिनकी वह अगुवाई करता है: लापरवाह, हठीले, और दण्डित 1शमूएल 12:9,12,19

2.2.2.3. वह परमेश्वर जिसकी वह सेवा करता है: न्यायी, दयालु, विश्वासयोग्य 1 शमूएल 12:7,8,22

2.2.3. परमेश्वर: उसके अनुग्रह के चार प्रदर्शन:

2.2.3.1. वह हमें उस बात को पाने देता है जो वह नहीं चाहता कि हम पायें। 1 शमूएल 12:13

2.2.3.2. वह हमें खतरों से छुड़ाता है। 1 शमूएल 12:11

2.2.3.3. जब हम भटक जाते हैं तब वह हमें चेतावनी देता है। 1 शमूएल 12:18

2.2.3.4. जब वह हमें वह अनुशासित करता है तब भी वह हमें प्रोत्साहित करता है। 1 शमू. 12:23

2.2.4. लोग: चार तरीके जिनके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को उद्धार की ओर ले जाने का प्रयास करता है।

2.2.4.1. पवित्र जीवन का उदाहरण 1 शमूएल 12:3

2.2.4.2. विश्वासयोग्य शिक्षक निर्देश 1 शमूएल 12:7

2.2.4.3. ईश्वरीय मुलाकात की चेतावनी 1 शमूएल 12:18

2.2.4.4. खोये हुओं के लिये बोझ के साथ विश्वासी की मध्यस्थता की प्रार्थना 1 शमूएल 12:23

व्याख्यात्मक उपदेश: अर्पण

व्यवस्थाविवरण 26

प्रस्तावना

- शास्त्रपाठ: व्यवस्थाविवरण अध्याय 26
- मूल-विषय: अर्पण
- शीर्षक: देने के लिये स्वतंत्र
- लक्ष्य: भक्तों की आज्ञाकारिता कि जो प्रभु मांग रहा है वह उसे अर्पण करें

1. कौन? - व्यवस्थाविवरण 26:1

1.1. तू - व्यवस्थाविवरण 26:1

2. कब? - व्यवस्थाविवरण 26:1

2.1. जब तू अपने निज भाग (मीरास) को पा ले - व्यवस्थाविवरण 26:1

3. क्या? - व्यवस्थाविवरण 26:2,10,12

3.1. जो परमेश्वर तुझे देता है उसकी पहली उपज - व्यवस्थाविवरण 26:2

3.2. तेरा दशमांश - व्यवस्थाविवरण 26:12; उत्पत्ति 14:20; मलाकी 3:7-10

4. कैसे? - व्यवस्थाविवरण 26:2,11,13,14

4.1. पहले से तैयारी करते हुये - व्यवस्थाविवरण 26:2

4.2. आनंद के साथ - व्यवस्थाविवरण 26:11; 2 कुरिंथि 9:7

4.3. अनुशासन के साथ - व्यवस्थाविवरण 26:13

4.4. ईमानदारी के साथ - व्यवस्थाविवरण 26:14; मलाकी 1:6-14

5. कहां? - व्यवस्थाविवरण 26:2

5.1. पवित्रस्थान में - व्यवस्थाविवरण 26:2

6. किसे? - व्यवस्थाविवरण 26:3,4,10,12

6.1. याजक को - व्यवस्थाविवरण 26:3

6.2. परमेश्वर को – व्यवस्थाविवरण 26:4,10

6.3. परदेशी, अनाथ और विधवा को – व्यवस्थाविवरण 26:12

7. क्यों? – व्यवस्थाविवरण 26:3, 7-9

7.1. छुटकारे के कारण – व्यवस्थाविवरण 26:3,7-9

7.2. क्योंकि यह आज्ञा है – व्यवस्थाविवरण 26:16; लूका 6-38

7.3. क्योंकि तूने यह वचन दिया है – व्यवस्थाविवरण 26:19-19

8. उसके बाद?

8.1. अर्पण दे देने के बाद, आशीष को मांग – व्यवस्थाविवरण 26:15

8.2. पुराना नियम - बाहरी बातों पर जोर देता है

8.3. नया नियम - भीतरी बातों पर जोर देता है

उपसंहार

1. देना इसलिये नहीं है कि परमेश्वर को इसकी आवश्यकता है।
2. परमेश्वर को दो क्योंकि उसने तुम्हें पाप से स्वतंत्र किया है।
3. दशमांश इसलिये मत दो क्योंकि वह देना है।
4. दशमांश से भी अधिक दो क्योंकि तुम देना चाहते हो।

उपदेश के लिये पाठ्य-भाग अर्थात् शास्त्रपाठ

1. पाठ्य-भाग का वर्णन

11. पाठ्य-भाग को अंग्रेजी में टेक्स्ट् कहते हैं और यह लैटिन भाषा के जिस शब्द से आया है उसका अर्थ 'बुनाई करना' होता है।

1.2. पाठ्य-भाग को उपदेश की संरचना में बुना जाता है।

1.3. यह पवित्रशास्त्र का वह भाग होता है जिस पर उपदेश की संरचना की जाती है।

2. पाठ्य-भाग के उपयोग

2.1. यह उपदेश के लिये विषय या मुख्य विचार प्रदान करता है।

2.2. यह एक 'स्प्रिंगबोर्ड' अर्थात् आगे बढ़ने की प्रेरणा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है और ऐसे में वह पाठ्य-भाग उपदेश के भीतर विशिष्ठ नहीं होता है।

2.3. यह उपदेश का प्रमुख केंद्र हो सकता है और ऐसे में फिर उसके प्रत्येक शब्द का ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया जाता है।

2.4. यह अनेक पदों का परिच्छेद हो सकता है या फिर उसका कुछ हिस्सा।

2.5. उपदेश के लिये एक पाठ्य-भाग अर्थात् शास्त्रभाग होना आवश्यक है क्योंकि हमें वचन का प्रचार करना है। 2 तीमुथियुस 2:15; 2 तीमुथियुस 4:2

3. बाइबल से पाठ्य-भाग लेने की आवश्यकता के कारण

3.1. हमें आज्ञा दी गई है कि हम वचन का प्रचार करें।

3.2. यह मसीही विश्वास का एक मात्र स्रोत है।

3.3. इसके द्वारा पवित्रशास्त्र का हवाला देना सुनिश्चित होता है।

3.4. यह श्रोताओं के समक्ष एक अधिकारपूर्ण तत्व को प्रस्तुत करता है।

3.5. यह एक रूपरेखा नियुक्त कर देता है और उपदेशक को विषय के बाहर छलांग लगाने से बचाता है।

3.6. यह उपदेश को मात्र व्याख्यान हो जाने से बचाता है।

3.7. यह उपदेश को एक रूप देने में सहायक ठहरता है।

3.8. पाठ्य-भाग श्रोताओं के लिये बाइबल की भाषा को वास्तविक एवं व्यक्तिगत बनाता है।

3.9. अप्रिय या आक्रमक सिद्धांतों को प्रचार करने में, जैसे कि नरक पर शिक्षा देने में, शास्त्रपाठ बहुत महत्व का ठहरता है।

4. पाठ्य-भाग का चुनाव

4.1. मुख्य विषयों के लिये मुख्य शास्त्रपाठों का चुनाव करें।

4.2. ऐसे शास्त्रपाठों का चुनाव ना करें जिन में अर्थ स्पष्ट नहीं है।

4.3. ऐसे पाठ्य-भाग चुनें जो बाइबल के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को प्रस्तुत करते हैं।

4.4. ऐसे पाठ्य-भाग चुनें जिन का संबंध व्यावहारिक मसीही जीवन से है।

4.5. ऐसे शास्त्रपाठों से उपदेश दें जिनमें नैतिकता और आचार संबंधी बातों पर अधिक बल दिया गया है, और इसके साथ ही ऐसे पाठ जो मात्र आत्मिक जीवन पर लागू होते हैं।

4.6. पाठ्य-भागों का उपयोग किसी समस्या या परिस्थिति में करने से सावधान रहें जब संदर्भ इसकी अनुमति नहीं देता है।

4.7. उपदेश को विकसित करते समय पाठ्य-भाग के प्रति ईमानदार रहें। जानी-पहचानी सच्चाइयों का समायोजन करने में ऐसे शास्त्रभागों को खोजिये जिनके बारे में कम जाना जाता है।

4.8. अपने प्रचार किये गये उपदेशों की सूची को रजिस्टर में दर्ज करके रखें ताकि संपूर्ण बाइबल से प्रचार किया जाना सुनिश्चित करें।

5. पाठ्य-भाग का मूल-विषय

5.1. मूल-विषय पाठ्य-भाग के **अनुकूल** होना चाहिये।

5.2. मूल-विषय उपदेश में **एकता प्रदान करने वाला** होना चाहिये।

5.3. मूल-विषय श्रोताओं को यह **जानकारी देने वाला** हो कि यह उपदेश किस बारे में है।

5.4. पाठ्य-भाग तथा मूल-विषय दोनों के द्वारा उपदेश के **उद्देश्य** का संकेत मिलना चाहिये।

6. पाठ्य-भाग का अध्ययन

6.1. पाठ्य-भाग को लेकर **प्रार्थना करें:** समझने के लिये सुव्यवस्थित अध्ययन के साथ-साथ ईश्वरीय अगुवाई की भी आवश्यकता होती है।

6.2. पाठ्य-भाग को **अपना बना लें:** वह स्वयं उपदेशक के लिये अर्थपूर्ण होना चाहिये।

6.3. **अध्ययन पद्धति के अनुसार** पाठ्य-भाग के सब प्रमुख शब्द/शब्दांशों का अध्ययन करें ताकि उसके अर्थ तक पहुंच सकें।

6.4. मुहावरों को ध्यानपूर्वक समझें ताकि **उचित व्याख्या** कर सकें। पाठ्य-भाग का स्वाभाविक अर्थ प्रस्तुत करें।

6.5. **प्रश्नों** की सहायता से पाठ्य-भाग पर विचार करें: कौन, क्या, क्यों, कब, कैसे और कहां।

6.6. अधिक विचार प्राप्त करने के लिये उस शास्त्रभाग के **समानांतर परिच्छेदों** को भी देखें।

6.7. यह भी नोट करें कि वह शास्त्रभाग पवित्रशास्त्र के संपूर्ण सत्य से कैसे संबंध रखता है।

6.8. लागूकरण को पाठ्य-भाग के बुनियादी अर्थ पर आधारित करें और वह उपदेशक के विचारों के अनुसार समझा जाने वाला ना हो। यह पाठ आज श्रोताओं के लिये कैसे लागू किया जा सकता है?

उपदेश के लिये उदाहरण

1. उदाहरण का वर्णन

1.1. यह बाइबलीय सच्चाई को विशिष्ट स्पष्टीकरण के साथ लागू करने का साधन होता है।

1.2. यह एक झरोका होता है जो प्रकाश को भीतर प्रवेश कराता है।

1.3. यह काल्पनिक, चित्रमय दृष्टिकोण को शब्दों में प्रस्तुत करना होता है; यह सत्य को ऊंचा करने का प्रयास करता है।

1.4. यह सत्य को सजीव और प्रभावकारी बनाता है।

1.5. मनोविज्ञान हमें बताता है कि ज्ञान हमारे पांच ज्ञानोंद्रियों के द्वारा इस अनुपात में प्राप्त किया जाता है: दृष्टि-85 प्रतिशत; सुनना-10 प्रतिशत; स्पर्श-1.5 प्रतिशत; गंध-1.5 प्रतिशत; और स्वाद 1.5 प्रतिशत।

2. उदाहरणों का उद्देश्य.

2.1. वे विषय पर रोशनी डालते हैं और सच्चाई को चमकाते हैं।

2.2. वे रूचि को पकड़ लेते हैं।

2.3. उदाहरण श्रोताओं के साथ घनिष्ठता बनाते हैं।

2.4. यदि उपदेशक अत्यंत तेज या गूढ़ हो तो उदाहरण श्रोताओं को गहन ध्यान लगाये रखने से विश्राम और छुट दिलाते हैं; औसतन श्रोता हर पांच मिनटों बाद अवकाश चाहते हैं।

2.5. उदाहरण विषय को स्पष्ट करते हैं। उपदेशक को इस बात के लिये समर्पित होना चाहिये कि स्पष्ट प्रस्तुतीकरण करें क्योंकि वह श्रोताओं तक जीवन और मृत्यु की बातों को पहुंचाता है।

2.6. उदाहरण सत्य को सजीव बनाते हैं और भाषण में सजीवता होना सब से अधिक चाहने योग्य गुण है।

2.7. उदाहरण तर्क-वितर्क को मजबूत करते हैं। इब्रानियों 11 विश्वास के तर्क को मजबूत करता है।

2.8 उचित उदाहरण सुनने वाले के जीवन में पाप के प्रति दोषी ठहरना संभव कराते है। लालच के विरुद्ध प्रचार करते समय कोई कदाचित् ही यहोशू की पुस्तक में लिखित आकान की घटना को या फिर प्रेरितों के काम में लिखित हनन्याह के उदाहरण को टाल सकता।

2.9. किसी बात के लिये राज़ी करवाने हेतु उदाहरणों का उपयोग किया जा सकता है। समापन करते समय ध्यान आकर्षित करने वाले उदाहरण का उपयोग करने से कार्यवाही का लाभ दर्शाया जा सकता हैं और उसके बाद आग्रह के साथ प्रोत्साहन और निवेदन किया जा सकता है।

2.10. उदाहरण स्मरण रखने में सहायक ठहरते हैं। इसकी संभवना अधिक होती है कि लोग उपदेश में से किसी और बात को स्मरण रखने की अपेक्षा उदाहरणों को स्मरण रखेंगे। काल्पनिक धारणाओं से अधिक चित्रों को स्मरण रखा जाता है। अच्छे उदहारण शाब्दिक चित्रण होते हैं।

2.11. उदाहरण उपदेश के लिये गहनों का काम करते है, उन्हें सुसज्जित करते हैं, संतुलित करते हैं, उनमें जोश और सजीवता भरते हैं।

2.12. उदाहरणों के द्वारा हलका-सा हास्य भी जोड़ा जा सकता है।

2.13. उदाहरण श्रोताओं की कल्पनाशक्ति को उकसाते हैं।

2.14. उपदेशक किसी बात को उदाहरणों के माध्यम से अप्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भी बोल सकते हैं।

2.15. उदाहरण उपदेश को व्यावहारिक बनाते हुये सत्य और जीवन को जोड़ने में सहायक होते हैं।

3. उदाहरणों के स्रोत

3.1. बाइबल – उदाहरणों के लिये बाइबल प्रमुख स्रोत है।

3.2. व्यक्तिगत अवलोकन – निसर्ग से, पृथ्वी और अंतरीक्ष की घटनाओं से भी।

3.3. भाषा – वर्णनात्मक भाषा, शाब्दिक चित्रण, दृष्टांत तथा अलंकारों की सहायता से।

3.4. इतिहास – भूतकाल की घटनाओं को वर्तमान दिनों की परिस्थितियों से जोड़ते हुये।

3.5. समाचार मीडिया – रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, इंटरनेट इत्यादि।

3.6. उद्धरण – गीतों से, कविताओं से, नीतिवचन, कहानियों से।

3.7. समकालीन जीवन परिस्थितियां – जो श्रोताओं से संबंध रखती हैं।

3.8. खोज – सब से उत्तम उदहारण वे होते हैं जो उपदेशक स्वयं चुनता है

4. प्रस्तुत करने की तकनीक

4.1. समय को बढ़ाना या घटाना करें।

4.2. जोर देने की पद्धति को बदलते जायें।

4.3. कभी-कभी उससे दी जाने वाली शिक्षा को बताकर फिर लागूकरण करें।

4.4. कभी-कभी शिक्षा का उल्लेख ना करे और श्रोताओं को ही लागूकरण करने दें।

4.5. परिचय देते समय शब्दों को बदलते रहें: जैसे कि, "डॉ. जोवेट ने कहानी बताई...," "जॉन ने कहा..."

4.6. भावात्मक स्वर या लहजे को बदलते जायें।

4.7. अलग-अलग आयु को संबोधित करें।

उपदेश की प्रस्तावना (परिचय)

1. उपदेश की प्रस्तावना के संबंध में सामान्य निगरानी

1.1. **वह संक्षिप्त हो:** लक्ष्य की सघनता, स्पष्टोक्ति, और सच्चाई जितनी अधिक विषय की प्रस्तावना में महत्वपूर्ण होती है वैसे और कहीं नहीं होती।

1.2. **प्रस्तावना बनाने के पहले आपको अपना संपूर्ण उपदेश मालूम होना चाहिये:** संपूर्ण उपदेश को लिख लेने के बाद ही प्रस्तावना को लिखना चाहिये। आप उपदेश का संपूर्ण मुख्य भाग (केंद्रिय मूल-विषय इत्यादि) निश्चित कर लेने के बाद ही यह ठहरा सकते हैं कि अब उसे कैसे प्रस्तावित किया जाये।

1.3. **आप अपने उस उपदेश का कारण बताइये:** प्रस्तावना यह बताने में सहायक होनी चाहिये कि उस उपदेश का महत्व और मूल्य क्यों है।

1.4. **बखूबी आरंभ करें:** आरंभ के वाक्यों को बहुत ध्यान देकर लिख लेना चाहिये, इस प्रकार से कि वे श्रोताओं की जिज्ञासा और ध्यान को आकर्षित करेंगे। नहीं तो, कमजोर-सा आरंभ अच्छे-भले उपदेश को नाकाम कर सकता है।

2. अच्छी प्रस्तावना के गुण

2.1. वह उपदेश के लिये **उपयुक्त हो:** रक्सीन ने कहा है, "पहली आधा दर्जन रेखाएं ही संपूर्ण चित्र को निर्धारित करती हैं।" ऐसी किसी भी बात की चर्चा न करें जो मूल-विषय से संबंधित नहीं है।

2.2. प्रारंभिक वाक्य ऐसे न हों कि **पूरे उपदेश को ही दे देंगे:** आश्चर्यचकित करने वाले तत्व को नजरअंदाज नहीं करना चाहिये।

2.3. प्रस्तावना ऐसा **पुल हो** कि वह श्रोताओं को उनकी उस समय की सोच से आगे उपदेश की बाइबलीय परिस्थिति में ले जाने वाली हो।

2.4. वह **स्वाभाविक** सी लगे: मात्र किसी खास अवसरों को छोड़कर कभी भी भव्य प्रदर्शन के साथ प्रस्तावना मत दीजिये, नहीं तो वही सारे उपदेश से अधिक चमकदार लगेगी।

2.5. इस में **पाठ्य-भाग को पढ़ना** सम्मिलित हो: यह उपदेश को उस सही दृष्टिकोण में ले आयेगा कि आगे कहा जाने वाला है।

2.6. यह **तथ्यपूर्ण, सरल, आकर्षक और प्रभावोत्पादक** हो: अतिशयोक्ति को टालें। प्रस्तावना को संदेश के मुख्य भाग में प्रवाहित होने दें।

2.7. यह **छोटी और संतुलित** हो: "प्रस्तावना असफल होने की संभावना हो सकती है यदि वह बहुत लम्बी (बहुत अधिक और बहुत दूर भटक जाना), बहुत विस्तृत (आधुनिक चित्रण में इधर-उधर भटकना), और बहुत अधिक स्पष्टता से (परिणाम स्वरूप अरुचिकर बन जाना) प्रस्तुत की गई हो" - आर. ई. व्हाईट

2.8. यह गुस्सा भड़कानेवाली ना हो: उपदेश की प्रस्तावना अपना दृष्टिकोण बताते हुये ना करें, यदि वह विषय विवादाग्रस्त हो या पाठ्य-भाग से भिन्न होता हो।

2.9. प्रस्तावना हमेशा अलग-अलग अंदाज में हो: वह प्रासंगिक हो या स्थानीय अर्थ से लागू होती हो।

कभी-कभी, आप कुछ प्रचलित या वैज्ञानिक रुचि की बात का भी उपयोग कर सकते हो।

3. प्रस्तुतिकरण

3.1. वास्तविक बने रहें: आप सामान्य रीति से जिस लहजे में बोलते हो उससे भिन्न रीति से ना बोलें। (कुछ उपदेशक भाषण की ऐसी शैली का प्रयोग करते हैं जैसे कि वे राजनेता है और भीड़ को प्रभावित करना चाह रहे हैं)।

3.2. प्रस्तावना में अपने खराब स्वास्थ्य के कारण क्षमा-याचना या बहाने प्रस्तुत न करें।

3.3. खुशामद करना या बहुत अधिक अलंकृत या तकनीकी भाषा, जो अच्छे संप्रेषण में बाधा बन सकती है, का प्रयोग करना टालिये।

3.4. ऐसी हर एक बात को टालिये जो अख्ड़पन, अहंकार, और प्रतिस्पर्धा का मजा लेती है। गंभीर बने रहें और श्रोताओं का भरोसा जीतने का प्रयास करें।

3.5. प्रस्तावना का उपयोग स्पष्टीकरण या व्याख्या करने के लिये नहीं परंतु परिचय देने के लिये ही करें। प्रस्तावना अपने आप में अंत नहीं है; यह अंत की ओर संकेत करती है जो आगे आयेगा।

उपदेश का उपसंहार (समापन)

1. उपसंहार का वर्णन

"उपसहार, उपदेश का सारांश होता है जिसमें उसका श्रोताओं के प्रतिदिन के जीवन से संबंध दिखाया जाता है। वह श्रोताओं को, संदेश की विषय-वस्तु के अनुरूप कोई निर्णय लेने का आह्वान देगा।" (एल. एम. पेरी)

2. उपसंहार के गुण

2.1. वह सुनने वालों को व्यक्तिगत लगना चाहिये।

2.2. वह उपदेश की विषय-वस्तु से मेल खाना चाहिये।

2.3. वह संपूर्ण उपदेश पर लागू होता होना चाहिये।

2.4. वह प्रभावहीन होने की संभावना होगी यदि उपदेश बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य के होगा।

2.5. वह कमज़ोर और उत्साहहीन होने की संभावना होगी यदि उसकी पर्याप्त तैयारी ना की जाये।

2.6. वह प्रभावहीन होने की संभावना होगी यदि उसमें पहले संदेश में उपयोग की गई शब्दावली की बहुत अधिक पुनरावृत्ति होगी।

2.7. इसके द्वारा किसी ऐसे नये विचार को प्रस्तुत न किया जाये जो उपदेश की विषय-वस्तु में न लिया गया होगा। वह, बिना भावुक होते हुये, भावनाओं को उत्साहित करे। यह उचित है कि पवित्रशास्त्र की शिक्षा के अनुसार हृदय में जोश भरा जाये और भावनाओं का मार्गदर्शन किया जाये।

2.8. वह इच्छा को आह्वान देता हुआ हो क्योंकि वह प्राय: सुनने वालों के भवितव्य को निर्धारित करेगा।

2.9. इसमें विविधता हो, नहीं तो कलीसिया हर सप्ताह एक ही प्रकार का निवेदन सुन-सुन कर उकता जायेगी।

2.10. यह संदेश में सुनायी गई बातों पर अंतिम बात कहना हो। वह संपूर्ण उपदेश पर आधारित कार्यवाही की मांग करता हो।

2.11. बात साफ है कि उपदेशक आमंत्रण प्रारंभ करे इसके पहले उपदेश समाप्त हो जाना चाहिये।

3. उपसंहार प्रस्तुत करने के संबंध में सलाह

3.1. यदि आप संदेश के अंतिम हिस्से में पिछड़ जाते हो तो उस पर काबू पाने के लिये आवाज को तेज और दोहराव को अधिक ना करें।

3.2. यदि आप को लगता है कि आप ने बहुत अच्छी प्रस्तुति नहीं की है तो उसके लिये क्षमा याचना का उल्लेख ना करें।

3.3. उसे बहुत बढ़ा कर प्रस्तुत ना करें; उसके बारे में उत्तेजित ना हों।

3.4. उपदेश का उपसंहार खराई, नम्रता तथा प्रार्थना की आत्मा में करें।

3.5. अंत में, यदि उपदेश के दौरान आप कोई अच्छा सा पाईंट भूल गये हों तो उसे बता देने का प्रयास न करें,

उसे छोड़ दीजिये।

3.6. जब समाप्त हो जाये, तो रूक जाओ।

"एक मुहल्ले के पादरी ने एक किसान से पूछा कि वह मात्र उसी दिन चर्च में क्यों आता है जब सहायक पादरी प्रचार करते हैं। उस किसान ने कहा, "सर, बात यह है कि वो जवान मि. स्मीथ जब कहते है, "अंत में," तो वे सचमुच उपदेश का अंत करते हैं। परंतु आप कहते तो हैं, "अंत में, . . . ," परंतु अंत करते ही नहीं" - आर. ई. व्हाईट

आमंत्रण - भाग 1[2]

1. आमंत्रण का वर्णन

"यह संदेश का अंतिम भाग है जो कलीसिया के समक्ष एक चुनौति रखता है कि उपदेशक ने परमेश्वर के वचन के रूप में जिस बात की घोषणा की है उस पर, सकारात्मक तथा सार्वजनिक रूप में कोई कार्यवाही करें।" - रवि जकर्याह

"आमंत्रण, आत्मा जीतने के लिये की गई कोई तिकड़म नहीं है। यह परिणाम को निश्चित करने के लिये कोई टोटका नहीं है। यह धर्मपरायणता को दृढ़ करने का कोई धार्मिक संस्कार नहीं है। यह मात्र मसीह की बुलाहट प्रस्तुत करना है कि उसके द्वारा दिये गये उद्धार के प्रस्ताव से, उसे प्रभु बनाये जाने की मांग से, उसकी सेवकाई के विशेष अधि कार से, मनुष्य का सामना करा दिय जाये।" - क्लीफटन् जे. ऍलन

2. आमंत्रण देने के कारण

2.1. यह बाइबल के अनुसार है

2.1.1. पहला राजा 18:21:- उन दिनों के भविष्यद्वक्ता बहुत कुछ वैसे ही थे जैसे आज के दिनों के सुसमाचार प्रचारक व्यवस्थित रूप से कार्य करने के लिये बुलाये गये हैं। भविष्यद्वक्ता लोगों को आह्वान करते हैं कि सच्चे परमेश्वर को प्रत्युत्तर देंगे और झूठ से मन फिरायेंगे। एलिय्याह कर्मेल पर्वत पर कहता है, "तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे? यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो तो उसके पीछे हो लो।" उसी प्रकार से, आज के सुसमाचार प्रचारक चुनावों को स्पष्ट करते हैं और उसके अनुसार आमंत्रण देते हैं।

2.1.2. मत्ती 11:28-29:- यीशु ने लगातार आमंत्रण दिया था कि लोग सर्वाजनिक रूप से उसे पहचाने और उसके पीछे चलें।

2.1.3. प्रकाशितवाक्य 22:27:- नया नियम एक महान आमंत्रण के साथ समाप्त होता है।

2.2. सुदृढ़ या मजबूत करना

"जो भावनायें उभारी गई हैं और इच्छाएं उत्तेजित की गई हैं वे शीघ्र ही चली जायेंगी यदि उन पर तुरंत कार्यवाही ना की जाये; अच्छी प्रेरणायें जैसी पहली बार उत्पन्न की गई थीं, यदि पहली बार ही उस पर कार्यवाही ना की जाये तो दुबारा वैसे ही उत्पन्न करना कठीन होता है।" फेरीस डी. व्हाईटसेल, 65 वेज टू गिव इवेन्जेलिस्टिक इन्विटेशन

2.3. स्मरणार्थक

2.3.1. यह श्रोताओं के लिये एक "मील का पत्थर" के रूप में स्मरण रहने का कार्य होता है।

2.3.2. पुराना नियम में बहुत बार परमेश्वर ने अपने लोगों को एक स्मारक बनाने कहा ताकि उन्हें और उनके बच्चों के लिये स्मरण करायेगा कि वहां क्या हुआ था।

2.3.3. मन-परिवर्तन के अनुभव में, आगे वेदी पर आना एक प्रतिकात्मक "स्मारक" बन सकता है ताकि उस अनुभव को स्मरण किया जाये।

2.4. ऐतिहासिक: परमेश्वर ने सामर्थी रीति से उन आमंत्रणों का उपयोग किया है जो विगत अनेक वर्षों में अनेक

प्रचारकों के द्वारा दिये गये। इसका एक सर्वोत्तम उदाहरण बिली ग्राहम स्वयं है।

2.5. व्यावहारिक: यह खोये हुओं को जीतने में या कलीसिया की उन्नति करने में सहायक ठहरता है।

3. आमंत्रण के प्रकार

3.1. आयु वर्ग के अनुसार

3.2. आवश्यकता के अनुसार

3.3. सार्वजनिक रीति से वेदी पर आने के द्वारा

3.4. हाथ उठाने के द्वारा

3.5. जहां आप हैं वहीं पर मन में प्रार्थना करने के द्वारा

3.6. कोई निर्णय कार्ड भरने के द्वारा

3.7. सप्ताह में कभी पासबान से मिलने के द्वारा

3.8. सभास्थान के बगल के कमरे में प्रार्थना करने हेतु बुलाने के द्वारा

3.9. और कोई ?

4. संबंधित लोग

4.1. अपने ही लोगों के मध्य उपदेश करने के समय पासबान को आमंत्रण के अलग-अलग प्रकार का उपयोग करना चाहिये ताकि लोग एक ही प्रकार से थक ना जायें।

4.2. जब कोई अन्य प्रचारक कलीसिया में आता है, तब उसके द्वारा उत्तम रीति से आमंत्रण दिया जा सकता है क्योंकि उसके द्वारा दिया गया निवेदन उससे भिन्न होगा जो वहां के पासबान द्वारा दिया जाता रहता है।

4.3. हमेशा सलाहकार तैयार रखने चाहिये जो आगे आने वाले लोगों से भेंट करेंगे और उनके साथ प्रार्थना करेंगे। बिली ग्राहम कहते हैं कि 80 प्रतिशत लोग जो मसीह को स्वीकार करने के आमंत्रण को प्रतिसाद देते हैं, वे वैसा वेदी पर आने का आमंत्रण देने के बाद करते हैं, सलाहकार के साथ के सत्र में करते हैं।

आमंत्रण - भाग 2

5. स्थान

5.1. सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश, अपने स्वभाव से, बाकी अन्य उपदेशों की तुलना में, अधिक मनवाने वाला होता है, और आमंत्रण उसी स्थानपर और उसी समय दिया जाना सब से अच्छा होता है (संदेश के अंत में)।

5.2. चाहे लोगों को आगे वेदी के पास बुलाया जाये, या बगल वाले के कमरे में, यह वहां की परिस्थिति और संस्कृति पर निर्भर करता है।

5.3. डॉ. बिली ग्राहम और अन्य बहुतेरे सुसमाचार-प्रचारकों ने प्रदर्शित किया है कि सभी संस्कृतियों में परमेश्वर के द्वारा आमंत्रण को उपयोग में लाया गया है।

6. समय

6.1. उपदेश के समान ही, आमंत्रण देने के पहले प्रार्थना और तैयारी करना आवश्यक होता है।

6.2. उपदेश के तुरंत बाद जाल को फेंकना अत्याधिक सहायक होता है।

6.3. परमेश्वर हमेशा चाहता है कि उससे लोगों का मेल **अभी** (बिना देर किये) हो जाये।

7. श्रोता की आवश्यकताएं जिन्हें संबोधित करते हुये उपदेशक अपने आमंत्रण के द्वारा निवेदन कर सकता है:

7.1. उसके पापों के संबंध में उसका विवेक

7.2. दण्ड का भय

7.3. उद्धार के आश्वासन की कमी/अपने सार्वकालिकभविष्य के संबंध में चिंता

7.4. मृत्यु की निश्चितता का भान

7.5. खालीपन का आभास, कि कुछ तो कमी है

7.6. सत्य की भूख

7.7. जीवन के अर्थ के महत्व की इच्छा

7.8. अकेलापन

7.9. टूटे रिश्ते, परिवार में या कहीं और संबंधों में

7.10. औरों के बारे में संदेह

7.11. क्रोध तथा द्वेष से संबंधित मामले

7.12. एक नया आरंभ करने की उत्सुकता

7.13. शारीरिक चंगाई की आवश्यकता (बीमारी, निर्बलता इत्यादि)

7.14. भौतिक आवश्यकताएं/नौकरी इत्यादि

8. आमंत्रण देना – लॉयड पेर्‌री

8.1. आमंत्रण **स्पष्टता** से दें।

8.2. सावधानी से दें।

8.3. **सहानुभूति** और **संवेदना** के साथ दें।

8.4. **निश्चय** के साथ दें।

8.5. **सौजन्य/विनम्रता** के साथ दें।

8.6. **आत्मविश्वास** के साथ दें।

9. आमंत्रण के संबंध में मुद्दे /विवाद

9.1. थिआलॉजिकल: प्रश्न किया जा सकता है कि आमंत्रण की थिआलॉजिकल यथार्थता है या नहीं और यह कि क्या वह पवित्र आत्मा की भूमिका को छीन लेता है क्या। यह प्रश्न इस उत्तर के द्वारा सहज ही दूर किया जा सकता है कि किसी ना किसी पद्धति का उपयोग तो करना ही होगा, और फिर ऑगस्टिन ने हमें स्मरण दिलाया है कि किसी भी पद्धति को उसके अधिक दुरुपयोग के द्वारा नहीं जांचा जाना चाहिये। आमंत्रण को उचित रीति से कोई दबाव न डालते हुये दिया जाये तो यह बहुत ही न्यायसंगत प्रक्रिया है।

9.2. भावनात्मक: हो सकता है कि प्रचारक सहज ही चालाकी के द्वारा काम निकालना चाहेगा और मन की भावनात्मक दशा को अत्याधिक उभारेगा कि जाल में फंसाया जाये। इसके बारे में गंभीरता से मना किया जाना चाहिये। तथापि, इस ओर ध्यान देना चाहिये कि भावना और भावुकता में अंतर होता है; भावनाओं का उचित और अनुचित स्थान होता है।

9.3. व्यावहारिक: लोगों को इस सोच के खतरे से बचाना होगा कि निर्णय लेने के लिये आगे वेदी पर आना ही एक मात्र तरीका है। आवश्यक है कि प्रचारक लोगों को हमेशा स्मरण दिलाये कि कुछ श्रोता ऐसे होंगे जो अपने चुनाव को लेकर अभी भी संघर्ष कर रहे होंगे और जब वे अपने घर जाकर उसके बारे में सोचते होंगे, तो अपने पलंग की बाजू में घुटने टेकना भी एक वैसे ही उचित स्थान हो सकता है, तथापि सार्वजनिक रीति से अपने अंगीकार को प्रगट करना शीघ्र ही होना चाहिये।

समापन:

- आमंत्रण को भय के साथ नहीं देखा जाना चाहिये, बल्कि उसे एक सुअवसर या विशेष अधिकार समझना चाहिये कि हम लोगों के समक्ष मसीह को स्वीकार करने का प्रस्ताव रख रहे हैं।
- यह हर एक प्रचारक की विशेष बुलाहट है।

सुसमाचार-प्रचारीय संदेश देना

पाठ 23 - 35

आगे के 13 पाठ, सुसमाचार-प्रचारीय नामक पाठ्यक्रम की रूपरेखा है,
जिन्हें बिली ग्राहम सेंटर के इंस्टीट्यूट ऑफ इवेन्जेलिजम के द्वारा तैयार किया गया है।
यह पाठ्यक्रम रेव्ह. डॉ. रॉबर्ट कोलमेन द्वारा विकासित और प्रस्तुत किया गया,
और स्कूल ऑफ इवेन्जेलिजम के लिये डॉ. डेल् गार्साईड द्वारा क्रमबद्ध किया गया।

प्रस्तावना : पाठ्यक्रम के दिशानिर्देश

1. सही अध्ययन

1.1. अध्ययन के घंटे ठहरा लें।

1.2. अभ्यास-कार्य को लिख लें।

1.3. अन्य प्रचारकों के उपदेशों के कैसेट/ऑडीयो सुनें।

1.4. पवित्रशास्त्र का उपयोग करें।

1.4.1. बाइबल सदा आपके साथ ही होनी चाहिये।

1.4.2. प्रत्येक बाइबल हवाले को देखें।

1.4.3. बाइबल पदों को ऐसे क्रम से लगायें कि वे एक दूसरे का स्पष्टीकरण करेंगे।

2. किसी सलाहकार को खोजें जो आपकी सहायता करेगा।

2.1. अकेले ही अध्ययन न करें।

2.2. निरुत्साहित ना हों।

2.3. अच्छे सलाहकार को खोजें, एक ऐसा मसीही जो प्रति सप्ताह आपके साथ भेंट करेगा।

2.3.1. चाहिये कि वह आपकी प्रचार करने की बुलाहट को समझे।

2.3.2. चाहिये कि वह आपकी उस इच्छा में सहभागी हो जो आपको खोये हुओं को मसीह के पास लाने की है।

2.3.3. चाहिये कि वह आपके साथ आपके संदेश के लिये प्रार्थना करे।

2.3.4. वह ऐसा होना चाहिये जो प्रचार करने में अनुभवी हो।

2.4. अपने सलाहकार के साथ प्रत्येक पाठ के लिये एक घंटे का समय दें।

2.5. अपने सलाहकार की सलाह का पालन करें।

2.6. उसकी निगरानी में तीन संदेश प्रचार करें।

2.7. अपने सलाहकार द्वारा किये गये विश्लेषण तथा मूल्यांकन को स्वीकार करें।

2.8. स्कूल ऑफ इवेन्जेलिजम के पास तीनो रिपोर्ट को भेजें।

3. सुसमाचार प्रचार करना

3.1. यह पाठ्यक्रम मात्र कक्षा में सीखे गये पाठों तक ही सीमित नहीं है। यह पाठ्यक्रम एक कार्यशाला है, सेवा-क्षेत्र में अभ्यास कार्य करते हुये इसे पूरा करें।

3.2. आपके लिये इस पाठ्यक्रम का सही महत्व कक्षा में सीखे गये पाठों को व्यावहारिक रीति से लागू करने में होगा।

3.3. इस पाठ्यक्रम की सही गुणवत्ता तब ही आरंभ होगी जब आप कक्षा में सीखे गये पाठों को लागू करेंगे।

3.4. यह पाठ्यक्रम सुसमाचार-प्रचारीय संदेशों की तैयारी एवं प्रचार करने पर केंद्रित है, संदेश की शैली या प्रकार चाहे जो लिया जाये।

3.5. जिन्हें लक्ष्य बनाया जाता है वे श्रोता ऐसे लोगों का मिलाजुला समूह होता है जो मसीही नहीं हैं और जो नाममात्र मसीही हैं।

3.6. प्रचार करने का स्थान वह होगा जहां जो लोग मसीही नहीं हैं वे एकत्रित हो सकेंगे।

3.7. जिस समय प्रचार किया जाये वह मात्र रविवार का ही दिन नहीं होगा परंतु ऐसा समय होगा जब वे लोग जो मसीही नहीं हैं वे एकत्रित हो सकेंगे।

3.8. एक अच्छे सुसमाचार-प्रचारीय संदेश की तैयारी व्यर्थ हो जायेगी यदि उसे प्रचार ना किया जाये।

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश क्या है?
उपदेश का उद्देश्य : पापियों का उद्धार

प्रस्तावना: आप क्या पढ़ेंगे

- सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश का लक्ष्य लोगों को मसीह के प्रति निर्णय लेने के लिये मनाना होता है।
- सुसमाचार-प्रचारीय संदेश एक साधन होता है जिसका उपयोग पवित्र आत्मा कर लेता है। 1 कुरिंथियों 1:21
- सुसमाचार-प्रचारीय संदेश एक पद्धति है जो बीज बोने के लिये, पैदा करने के लिये या फसल काटने के लिये काम में लायी जाती है।
- सुसमाचार-प्रचारीय उपदेशक को एक स्पष्ट सुसमाचारीय संदेश प्रस्तुत करने के लिये तैयार होना चाहिये।
- सुसमाचार-प्रचारीय संदेश के आवश्यक घटक निम्नलिखित हैं:
  - 0.1. वे पवित्रशास्त्र के अधिकार पर आधारित होते हैं।
  - 0.2. उनमें पाप और न्याय की परिभाषा सम्मिलित होती है।
  - 0.3. वे पश्चाताप (मन फिराव) तथा विश्वास का स्पष्टीकरण करते हैं।
  - 0.4. वे लोगों को मसीह के प्रति निर्णय लेने का आमंत्रण देते हैं और उन्हें उसके शिष्य होने की बुलाहट देते हैं।

1. यीशु का व्यक्तित्व

1.1. यीशु पर ध्यान देना: प्रतिज्ञात मसीह, परमेश्वर का पुत्र, जगत का उद्धारकर्ता।

1.2. वह जगत के पापों के लिये क्रूस पर मरा। वह मृत्यु में से जी उठा कि पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त करे; वह जीवित है और पिता के दाहिने हाथ बैठा है।

1.3. यीशु ही एक मात्र सच्चे धर्म का संस्थापक है; वह अद्वितीय और एकमात्र है। यूहन्ना 8:12; 14:6; प्रेरितों 4:12

2. पवित्रशास्त्र का अधिकार

2.1. बाइबल हमारे प्रचार का बुनियादी आधार है। यूहन्ना 5:39

2.2. बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से रची गई है। 2 तीमु. 3:16-17

2.3. बाइबल किसी भी उपदेश का प्रथम स्रोत है। 1 कुरिंथि 15:3-4; 1 थिस्स 2:13

2.4. जब बाइबल को प्रचार किया जाता है तो उसमें परमेश्वर की सामर्थ होती है। यिर्मयाह 23:29

3. पाप और न्याय

3.1. बहुत-से लोगों के लिये, पाप और न्याय अच्छा लगने वाले विषय नहीं हैं, परंतु पाप और उसके गंभीर परिणामों की स्पष्ट परिभाषा (व्याख्या) देना महत्वपूर्ण है।

3.2. हर एक ने पाप किया है और वह परमेश्वर से दूर किया गया है। रोमियों 3:23

3.3. यदि प्रचार में पाप का परिणाम नहीं बताया जा रहा है तो वह सुसमाचार प्रचार नहीं है।

यहेजकेल 18:4,30; इब्रा. 9:27

3.4. "शुभ समाचार" को स्पष्ट करने के लिये "बुरे समचार" को बताना ही चाहिये।

3.5. परमेश्वर एक सिद्ध न्यायी है, और अवश्य है कि वह हमारे विद्रोह और स्वतंत्रता (स्वच्छंदता) को दण्ड दे।

3.6. किसी अन्य विषयों की तुलना में, न्याय पर दिये गये उपदेश को सुनकर अधिक लोग मसीह के पास आते हैं।

3.7. यह संदेश अविलंब दिया जाने के लिये अति-आवश्यक और अनंतकाल के लिये महत्वपूर्ण है।

4. पश्चाताप (मन फिराव) और विश्वास

4.1. परमेश्वर ने उसके साथ मेल किये जाने का उपाय उपलब्ध कराया है।

4.2. अवश्य है कि हम उसकी उद्धार की योजना को, उसके द्वारा कलवरी पर व्यक्त किये गये प्रेम को समझें।

4.3. अवश्य है कि हम पाप से मन फिरायें (पश्चाताप करें) और परमेश्वर की ओर से मिलने वाली पापक्षमा की ओर फिरें (विश्वास करें)।

4.4. परमेश्वर हमें नया हृदय और नया आत्मा देने की प्रतिज्ञा करता है। यहेजकेल 18:31; यूहन्ना 3:3

4.5. पश्चाताप मात्र पछताने से अधिक है; विश्वास मात्र बौद्धिक ज्ञान से अधिक है। प्रेरितों 26:20; याकूब 2:19

5. निर्णय लेने के लिये आमंत्रण

5.1. आवश्यक है कि लोगों करे सुअवसर दिया जाये कि उन्होंने जिस सच्चाई को सुना है उसके प्रति अपना प्रतिउत्तर दें।

5.2. आमंत्रण देना महत्वपूर्ण होता है क्योंकि हो सकता है कि कुछ एक जन के लिये मसीह को स्वीकार करने का वही एक अवसर हो सकता है।

5.3. लोगों को इन्तजार करते न रहना पड़े; कल का कोई भरोसा नहीं है।

6. शिष्यता और सहभागिता

6.1. यह आवश्यक है कि जो पश्चाताप करते हैं और विश्वास करते हैं उन्हें इस बात का साफ-साफ स्पष्टीकरण दिया जाये कि परमेश्वर तथा परमेश्वर की अन्य संतानों की सहभागिता में चलना क्या होता है।

6.2. यीशु ने अपने शिष्यों को महान आदेश दिया है कि वे औरों को शिष्य बनायें। मत्ती 28:19-20

6.3. नये विश्वासी को आत्मिक परिपक्वता में बढ़ने के लिये और गवाह बनने के लिये विकसित करना चाहिये और शिष्यता में बढ़ाना चाहिये।

7. मसीह के साथ की सहभागिता में विश्वासियों की एकता यह वृद्धि के लिये अनिवार्य है। 1 कुरिंथि 12,27

7.1. नये विश्वासी को यह सहभागिता स्थानीय कलीसिया में प्राप्त होगी। इब्रा. 10:24-25

7.2. नया विश्वासी प्रभु की उपस्थिति में आनंदित होगा। तीतुस 2:13-14

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश क्या है?
उपदेश का निवेदन : खोये हुओं के लिये प्रेम

प्रस्तावना:

- यह पहली महत्वपूर्ण बात है कि हम लोगों को उनके उद्धार की आवश्यकता दिखायें।
- बहुत-से लोग आत्मिक रीति से सोये हुये हैं और नहीं समझते कि वे अनंत मृत्यु के खतरे में हैं।
- अवश्य है कि सुसमाचार-प्रचारीय उपदेशक पाप के सांसारिक और अनंतकालीक खतरों का स्पष्ट वर्णन करे। तथापि, मात्र इतना ही पर्याप्त नहीं है कि पापियों को खतरों के बारे में बतायें; परंतु आपके मन में पापियों के प्रति दया-करुणा भी होनी चाहिये।

1. पाप का अर्थ

1.1. परमेश्वर से अलग होकर काम करना, विचार करना और जीवन जीना यह पाप है।

1.2. दो प्रकार के पाप हैं: (1) वह करना जो परमेश्वर को अप्रसन्न करेगा; और (2) वह न करना जो परमेश्वर चाहता है।

1.3. हम बाह्य रूप से पाप करते हैं जब हम दस आज्ञाओं में से किसी आज्ञा को तोड़ते हैं। निर्गमन 20:3-17

1.4. हम मन में पाप करते हैं जब हमारे विचार, भावनाएं या मनोवृत्ति परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध होती हैं। मत्ती 5

1.5. मात्र वही जो हम मसीह में होकर परमेश्वर के लिये करते हैं पाप नहीं होता है। मत्ती 7:12; व्यव. 6:4-5

1.6. यीशु ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो पापरहित था; परंतु वह हमारे समान परखा गया। रोमि. 3:10; इब्रा. 4:15

1.7. यीशु ने कुछ भी गलत नहीं किया; उसने मात्र धर्म के काम किये।

2. पाप की समस्या

2.1. पापी उद्धार प्राप्त किये बिना स्वर्ग नहीं जा सकते, क्योंकि परमेश्वर अपनी उपस्थिति में पाप को सह नहीं सकता।

2.2. हमारा पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है, और हम स्वयं होकर उससे छुटकारा नहीं पा सकते।

2.3. पापी लोग दण्डित हैं। यहेजकेल 18:4; रोमियों 6:23

2.4. पापी लोग अहंकारी हैं और आसानी से कबूल नहीं करते कि वे अपने आप का उद्धार करने में असमर्थ हैं। नीतिवचन 14:12

2.5. पापी अपनी परमेश्वर के साथ की दूरी को पहचान सकते हैं क्योंकि उसीने उन्हें अपनी संगति में रहने के लिये रचा है। अय्यूब 23:3

2.6. पापी व्याकुल हैं जबकि वे अपने गलत कामों को भूल जाने का प्रयास करते हैं। भजन 51:3

2.7. एक विद्रोही को, जीवित परमेश्वर के द्वारा दण्ड सुनाया जाना यह भयानक बात है। इब्रा. 10:26-27,31

2.8. उद्धार न पाये हुये लोग नरक में जायेंगे, परमेश्वर नहीं चाहता कि ऐसा हो। यूहन्ना 3:17-20

2.9. परमेश्वर के प्रकाश का इन्कार करने के संबंध में, सुसमाचार-प्रचारक/उपदेशक लोगों को चेतावनी देता है।

3. परमेश्वर की दया-करुणा को कैसे बताया जाये

3.1. परमेश्वर के न्याय के साथ-साथ उसकी करुणा भी है। यिर्मयाह 31:3

3.2. बहुतेरे लोग मानते हैं कि यह संसार उनके विरुद्ध है, और उनकी आवश्यकता है कि वे जानें कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है और वह उनके पक्ष में है। भजन 142:4

3.3. बहुतेरे त्यागा हुआ और भयभीत महसूस करते हैं, और उन्हें आशा की आवश्यकता है।

3.4. मनुष्यजाति के लिये एक मात्र आशा यीशु ही है। उसका प्रेम कभी साथ नहीं छोड़ता। भजन 142:5-6; 1 पतरस 5:7

3.5. अवश्य है कि उपदेशक अपने संदेशों में, इस उद्धार न पाये हुये और थके हुये जगत को प्रेमी और करुणामय परमेश्वर का हृदय दिखाये।

3.6. उद्धार न पाये हुओं के लिये, भटके हुओं के लिये, परमेश्वर मार्ग उपलब्ध कराता है कि उसकी ओर लौट आयें। यशायाह 53:5,6,11

3.7. उद्धार के लिये परमेश्वर की ओर से किया गया प्रावधान मसीह में विश्वास करने के द्वारा है। रोमियों 5:8; 8:32; 2 पतरस 3:9; तीतुस 3:4-5

3.8. परमेश्वर के अनुग्रह का अर्थ वह आशीष है जिसे पाने के लायक हम नहीं हैं। मत्ती 7:11; इफिसियों 2:8-9; इफिसियों 2:4-5

3.9. सुसमाचार प्रचारक/उपदेशक लोगों से निवेदन/विनती करता है कि परमेश्वर से मेल कर लो। 2 कुरिंथियों 5:20-21

4. अपनी करुणा को कैसे प्रदर्शित करें

4.1. हम जिनसे प्रेम करते हैं उन्हें अपना जीवन और सम्पत्ति देते हैं। यूहन्ना 15:13; रोमियों 9:2-4

4.2. सुसमाचार प्रचारक, परमेश्वर का राजदूत है, परमेश्वर जो राजा है उसका प्रतिनिधि है। 2 कुरिंथि 5:19-20

4.3. उद्धार न पाये हुओं के प्रति अपनी भावनाओं को, सच्चाई के आंसुओं के साथ प्रदर्शित करने से न डरें।

4.4. यीशु उद्धार न पाये हुओं के लिये, उनके अविश्वास के कारण रोया। यूहन्ना 11:25-26; 33,35,38; लूका 19:41-44

4.5. निर्बल तथा अंधों को अपराधी ठहराना आसान है, परंतु ऐसा करने से उनमें परिवर्तन नहीं आयेगा। इसके बजाय हम प्रभु से मांगे कि उद्धार न पाये हुओं के प्रति हमारे हृदयों को करुणा और बोझ से भर दे। भजन 23:3

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश क्या है?
उपदेश की विषय-वस्तु : मसीह का सुसमाचार

प्रस्तावना

- मसीह के सुसमाचार में, विनाशकारी पाप को नाश करने की अद्‌भुत सामर्थ है।
- यीशु ने पाप को हरा दिया, हमें उसके शाप से छुड़ाया, और हमें परमेश्वर के परिवार में पुनः स्थापित किया।
- शुभ समाचार यह है कि यीशु की मृत्यु के द्वारा लोग तुरंत पापों की क्षमा का अनुभव कर सकते हैं।
- वे लोग जो जानते हैं कि वे निराशाजनक ढंग से खोये हुये हैं, वे सुनना चाहते हैं कि यीशु के कारण एक आशा है।
- अतः, सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश लोगों को यीशु मसीह में उद्धार पाने हेतु विश्वास करने की ओर ले आना है।
- किसी भी सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश के तीन घटक हैंः यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनःरुत्थान 1 कुरिंथि 15:3-8
- सुसमाचार को प्रस्तुत करने के अनेक तरीके हैं, जिनमें यह भी एक हैः पाप, क्रोध, पापक्षमा, उद्धार पाने हेतु विश्वास, स्वर्ग की आशा इत्यादि
- सच्चाई यह है कि बहुतेरे लोग खोये हुये (उद्धार न पाये हुये), दण्डित और परमेश्वर से अलग किये हुये हैं। रोमियों 10:14-15
- अनेक पास्टर और उपदेशक हैं, परंतु मसीह के सुसमाचार की घोषणा करने वाले सुसमाचार-प्रचारीय उपदोक पर्याप्त नहीं हैं।

1. मसीह का व्यक्तित्व

1.1. यीशु, मनुष्य देह में परमेश्वर है, वह पृथ्वी पर आया कि हमारे उद्धार के लिये उपाय तैयार करे।

1.2. यीशु हम मनुष्यों के ऐवज में मरा, उसकी देह ने मृत्यु को सहा कि हमारे पापों के दण्ड को चुकाये।

1.3. यीशु ने ऐसा सिद्ध जीवन जीया जिसके द्वारा उसने हमारे दोष को दूर करने के लिये व्यवस्था की सारी मांगों को पूरा किया।

1.4. यीशु को दिये गये 100 नाम हैं जो हमें उन अद्‌भुत बातों को देते हैं जिनके द्वारा हम उस शुभ समाचार को बता सकते हैं कि उसने हमारे लिये क्या किया है।

1.5. यीशु के बारे में बताने का एक और तरीका यह है कि उसके द्वारा मिलने वाले छुटकारे के उन विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करें जो उस पर विश्वास करने वालों और उसे ग्रहण करने वालों को बहुतायत से दिया जाता है।

1.6. सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश के द्वारा, यीशु के साथ व्यक्तिगत रिश्ता स्थापित करने की आवश्यकता को प्रस्तुत किया जाता है।

1.7. सुसमाचार-प्रचार यह प्रचार करना है कि मसीह यीशु ही एक मात्र आशा, जगत का एकमात्र उद्धारकर्ता

है।

2. मसीह की मृत्यु

2.1. क्रूस मात्र सजावट की वस्तु या चिन्ह से बढ़कर है; वह वास्तव में मृत्यु का भयानक साधन है।

2.2. यीशु ने क्रूस पर हमारे पापों के लिये एक सिद्ध बलिदान कर दिया क्योंकि वह स्वयं पाप रहित था।

2.3. इसलिये क्रूस स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक प्रकार का पुल है।

2.4. परमेश्वर पिता ने, मसीह की मृत्यु को सब मानवजाति के पाप-अपराध के लिये चुकाये गये दाम के रूप में माना है।

2.5. अब परमेश्वर कोई और सजा की मांग नहीं करता; सब उसके साथ के रिश्ते में प्रवेश कर सकते हैं।

2.6. इस उपहार को प्राप्त करने के लिये एक मात्र आवश्यकता यह है कि यीशु में और उसके बलिदान में विश्वास किया जाये।

2.7. क्रूस के गंभीर और दु:ख भरे विषय प्रचार किये जा सकते हैं: पाप का अत्यंत भय, मृत्यु, दण्ड इत्यादि।

2.8. क्रूस के चमकदार विषयों का भी प्रचार किया जाना चाहिये: सामर्थ, छुटकारा, स्वतंत्रता, चंगाई, स्वर्ग की आशा, इत्यादी

3. मसीह का पुन:रुत्थान ..

3.1. शिष्यों को, यीशु अर्थात् उनके प्रभु की मृत्यु ने निराशा में डाल दिया था। वे तबाह हो गये जैसा महसूस कर रहे थे क्योंकि वे उसकी उस प्रतिज्ञा को भूल गये थे जो उसने मृत्यु में से जी उठने के बारे में की थी। मत्ती 20:19

3.2. उसके पुन:रुत्थान के बाद ही शिष्यों को उसकी प्रतिज्ञा स्मरण आयी। यूहन्ना 2:22

3.3. पुन:रुत्थान सुसमाचार का केंद्रिय विषय है। 1 कुरिंथि 15:7

3.4. खाली कब्र का महिमामय प्रकाश स्पष्ट करता है कि मसीह ने क्रूस पर क्या किया है।

उपसंहार

- सुसमाचार के संदेश का सारांश यह हो सकता है: "यीशु तुम्हारे लिये मरा।"
- सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश में, बाइबल की तीन सच्चाइयों पर ध्यान केंद्रित करें: यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुन:रुत्थान।
- यीशु ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो हमारे उद्धार के लिये आवश्यक शर्तों को पूरा कर सकता था।
- परमेश्वर के प्रेम और पापक्षमा की हद को प्रगट करने के लिये यीशु की क्रूस पर की मृत्यु अनिवार्य थी।
- उसका शारीरिक पुन:रुत्थान उसकी मृत्यु पर की विजय को सत्य प्रमाणित करता है, और खाली कब्र, उसके शिष्यों से की गई प्रतिज्ञाओं की विश्वासयोग्यता को सत्य प्रमाणित करती है।
- मसीह का परिचय, उसका क्रूस पर का कार्य, और खाली कब्र का प्रमाण ये सुसमाचार के मूलभूत तत्व हैं।

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश क्या है?
उपदेश का तरीका: बताना और आमंत्रित करना

प्रस्तावना

- सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश को विकसित करने के लिये कुछ विशिष्ठ तत्व हैं।
- निम्नलिखित सारे तत्व महत्वपूर्ण हैं: अभिप्राय की एकता, लोगों के जीवन से सच्चाई का लागूकरण, श्रोताओं के लिये दमदार आह्वान कि मसीह के लिये निर्णय लें, और पवित्र आत्मा पर निर्भरता।
- किसी भी सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश का एक सर्वोच्च लक्ष्य होता है: लोगों की अगुवाई करना कि वे उद्धार पाने हेतु मसीह में विश्वास करेंगे।
- अवश्य है कि उपदेशक लक्ष्य को बतायें और लोगों को स्पष्ट शिक्षा दें कि वे उद्धार कैसे पा सकते हैं।
- आप अपने उपदेश को कैसे तैयार करते हैं और कैसे प्रस्तुत करते हैं इसका निर्धारण इस बात से होगा कि आप श्रोताओं से किस प्रकार का प्रत्युत्तर चाहते हैं।
- स्पष्ट रीति से सिखाना, अच्छी रीति से प्रस्तुत करना ये बातें श्रोताओं को प्रोत्साहित करेगी कि दिये गये आमंत्रण को सही रीति से प्रत्युत्तर दें और अपेक्षित परिणाम को उत्पन्न करें।

1. संदेश

1.1. उसे सरल बनाये रखें

1.1.1. लोगों की भाषा का उपयोग करें; ऐसी भाषा का उपयोग करें जो गैर-मसीही लोग सरलता से समझ सकेंगे।

1.1.2. तकनीकी भाषा का प्रयोग न करें। आवश्यक बातों को धर्मविज्ञान के स्पष्टीकरण के बिना बतायें।

1.1.3. अत्याधिक विस्तृत सूचनाओं के साथ आरंभ न करें; अपनी भाषा से किसी को उलझा न दें। प्रेरितों 16:20

1.2. उसे संक्षिप्त रखें

1.2.1. संदेश संक्षिप्त हो कि अविश्वासियों के ध्यान को पकड़ कर रख सकें।

1.2.2. संक्षिप्तता का अंदाज समय से नहीं परंतु उन श्रोताओं की सुनने की आदत से निर्धारित किया जाये।

1.2.3. उनके स्तर के अनुरूप ग्रहण किया जाने योग्य संदेश प्रस्तुत करें।

1.3. उपयुक्तता

1.3.1. श्रोताओं की आवश्यकताओं को संबोधित करें: उन्हें सुपरिचित लगने वाले अनुभवों को सम्मिलित करें।

1.3.2. ऐसी भाषा का उपयोग करें जो उपयुक्त प्रतीकों या भावों से भरी होगी जिनसे वे संबंध रखते हैं।

1.4. अत्यावश्यकता

1.4.1. अवसर को झपट लें: ऐसा विश्वास करें कि संदेश सुनाने का यह आपका अंतिम अवसर है।

1.4.2. इस पर जोर दें कि यह परमेश्वर की प्रसन्नता का समय है। 2 कुरिं 6:2; इब्रा 3:7,8,13,5; 4:7

1.5. अपेक्षा

1.5.1. विलियम केरी ने कहा है: "परमेश्वर से बड़ी बातों की अपेक्षा करें; परमेश्वर के लिये बड़ी बातों का प्रयास करें।" प्रेरितों 2:38-39

1.5.2. परमेश्वर से अपेक्षा करें कि वह प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा; लोगों से अपेक्षा करें कि वे सकारात्मक रीति से प्रत्युत्तर देंगे। 2 पतरस 3:9

2. आमंत्रण

2.1. आमंत्रण के आवश्यक घटक

2.1.1. आमंत्रण स्पष्ट और सरल हो: "यीशु के पास आओ।"

2.1.2. खरे अर्थ से यह आमंत्रण परमेश्वर पिता और पुत्र की ओर से प्रस्ताव है। परमेश्वर कहता है, "आओ" - यशा 1:18; मत्ती 11:28; 19:21; यूहन्ना 6:37; प्रकाशित 22:17

2.1.3. परमेश्वर किसी पर दबाव नहीं डालेगा कि उसके प्रस्ताव को उत्तर दे; प्रस्ताव को स्वीकार किया जाना चाहिये।

2.1.4. वास्तविक संदेशवाहक पवित्र आत्मा है जो हृदयों को स्पर्श करता है।

2.2. प्रत्युत्तर के प्रकार

2.2.1. ऐसे अनेक प्रकार हैं जिनके द्वारा हम लोगों को आमंत्रित कर सकते हैं कि मसीह के द्वारा दिये जाने वाले उद्धार के प्रस्ताव को स्वीकार करें; श्रोताओं की परिस्थिति एवं आदतों पर हमारे आमंत्रण का प्रकार निर्भर करेगा।

2.2.2. अच्छा होगा कि आमंत्रण का आरंभ प्रार्थना से करें; बहुतेरे होंगे जो प्रार्थना करना नहीं जानते होंगे।

2.2.3. कुछ खास परिस्थितियों में, यह कहना अच्छा होता है कि प्रत्युत्तर देने वाले लोग प्रार्थना के बाद अपने स्थान पर रूक रहें।

2.2.4. कुछ अन्य परिस्थितियों में, यह कहना अच्छा होता है कि लोग अपने स्थान से निकल कर आगे वेदी पर आयें।

2.2.5. एक और तरीका होता है कि लोगों को अपने हाथों को उठाने कहा जाये कि अगुवा उन्हें देख सकें।

2.2.6. यह महत्वपूर्ण है कि जो मसीह के पास आते हैं वे अपने विश्वास का सार्वजनिक स्वीकार करें (यह कैसे और कब किया जायेगा यह परिस्थिति पर निर्भर करता है।) रोमियों 10:10

2.2.7. कोई भी बाहरी तरीका किसी का उद्धार नहीं करता है, परंतु मात्र स्वेच्छापूर्वक हृदय से दिया गया प्रत्युत्तर ही!

2.3. लोग मसीह के पास आते हैं उसके बाद

2.3.1. आमंत्रण को दिया गया प्रत्युत्तर यह नये विश्वासी का पहला कदम होता है।

2.3.2. इसके बाद नये विश्वासी को किसी परिपक्व मसीही की संगति से जोड़ा जाये।

2.3.3. स्थानीय कलीसिया के द्वारा नये विश्वासी को शिष्यता की शिक्षा दी जाये।

2.3.4. प्रत्येक प्रचारक द्वारा फॉलो-अप की ओर गंभीरता से ध्यान दिया जाना चाहिये।

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश कैसे तैयार करें?

बाइबल का महत्व

प्रस्तावना

- हम, पापों की क्षमा और परमेश्वर के साथ की सहभागिता का अद्‌भुत प्रस्ताव पवित्र आत्मा की सहायता के बिना नहीं कर सकते हैं। हम मात्र वही घोषणा कर सकते हैं जो स्वयं परमेश्वर ने बताया है कि यीशु कौन है (यूहन्ना 10:30), वह पृथ्वी पर क्यों आया (लूका 19:10), और लोगों को परमेश्वर के पास लौटा लाने के लिये उसने क्या किया (रोमियों 5:8-9)।
- बाइबल उपदेशक को ईश्वरीय अधिकार देती है कि सत्य को दृढ़ विश्वास के साथ प्रचार करें।
- अवश्य है कि हम वचन का प्रचार करें; अपने मतों का नहीं, अपने अनुभवों का नहीं या अपने विश्वास की पद्धति का नहीं। 2 तीमुथियुस 4:2
- बहुतेरे महान विचारवंतों ने बाइबल को महत्व दिया है: कान्त, न्यूटन, आइन्स्टाइन, इत्यादि
- परमेश्वर उन संदेशों को सामर्थ देता हैं जो उसके वचन पर आधारित होते हैं; और उसकी सामर्थ जीवनों को बदलती है। रोमियों 1:16

1. उपदेशक के लिये पवित्रशास्त्र अनिवार्य है

1.1. बिली ग्राहम का उदाहरण: वे अनेक घोषणाओं का आरंभ इन शब्दों से करते थे, "बाइबल कहती है...."

1.2. यीशु मसीह ने अक्सर पवित्रशास्त्र से हवाले दिये। लूका 4:4,8,12

1.3. यीशु ने अपने विरोधियों से कहा कि पवित्रशास्त्र उसकी गवाही देता है। यूहन्ना 5:39

1.4. बाइबल गवाही देती है: यीशु शब्द है। यूहन्ना 1:1,14

1.5. लेलैन्ड वॅन्ग का आदर्शवाक्य था: "बाइबल पढ़ा नहीं तो नाश्ता नहीं।"

1.6. उपदेशक के लिये आवश्यक है कि प्रतिदिन के मनन को नियमित बाइबल पठन की आदत के साथ बनाये रखें। आपका वचन का अध्ययन और नियमित प्रार्थना का समय आपको बाइबल आधारित संदेशों की प्रेरणा देगा।

1.7. "जैसा पास्टर, वैसी कलीसिया:" यदि पास्टर परमेश्वर के वचन को महत्व देता है तो उसकी कलीसिया भी देगी। यदि वह वचन को महत्व नहीं देता, उसकी कलीसिया भी वचन को महत्व देना नहीं सीखेगी।

2. पवित्रशास्त्र को उपदेश में उपयोग करने का एक सही तरीका है

2.1. पवित्रशास्त्र को उपयोग करने का गलत तरीका भी है। उदाहरण के लिये, कुछ पास्टर शास्त्रभाग को पढ़ते हैं, और उसके बाद आगे अपने संदेश में उसका कोई उल्लेख नहीं करते।

2.2. उपदेश तैयार करते समय अवलोकन के लिये इन प्रश्नों को पूछना चाहिये: कौन? क्या? कहां? कब? क्यों? कैसे?

2.3. चुने गये शास्त्रभाग की तुलना उन शास्त्रभागों से करें जो उसीके जैसे विषय पर कहते हैं।

2.4. कभी-कभी, बाइबल की घटना को अपने शब्दों में बताना बहुत प्रभावकारी होता है।

2.5. पवित्रशास्त्र में उन घटनाओं को और कथनों को खोजें जो परमेश्वर के पास आने के लिये लोगों को आह्वान देते हैं।

2.5.1. यहोशू: "आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे.... मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा।" यहोशू 2:15

2.5.2. यहेजकेल: "उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इस से कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्यों मरो?" यहेजकेल 33:11

2.6. सुसमाचार का उपदेशक एक ऐसे परमेश्वर को प्रस्तुत करता है जो अपने लोगों से निवेदन करता है और उनसे विनती करता है कि वे यीशु को चुन लें ताकि वे उसकी दया का आनंद इस जीवन में तथा आने वाले युग में भी उठा सकें।

2.7. हमेशा ही ऐसे कुछ लोग होंगे जो आलोचक और हंसी उड़ाने वाले होंगे और जो इस बात का इन्कार करेंगे कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, और इसलिये, वे बाइबल के अधिकार को नकारेंगे।

2.8. प्रेरित पौलुस अपने समय के एक सर्वोत्तम महाविद्यालय में शिक्षा पाया हुआ था, तथापि उसने अपनी बुद्धिमत्ता को विनम्रता के साथ वचन के अधिकार और पवित्र आत्मा के निर्देशों के अधीन रखा। रोमि. 1:16

2.9. वचन पर आधारित संदेश दृढ़ निश्चयों के साथ, स्पष्ट साहस के साथ तथा आत्मविश्वास के साथ भरा होता है कि उसकी उद्धार करने की सामर्थ अनेक श्रोताओं को मसीह का चुनाव करने की ओर ले आयेगी।

2.10. ''बालकपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है।'' 2 तीमुथियुस 3:15

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश कैसे तैयार करें?
प्रार्थना की आवश्यकता

प्रस्तावना

- बाइबल पढ़ना और प्रार्थना: जब भी आप बाइबल पढ़ते हैं तो उस हर एक समय आपका हृदय प्रार्थना के लिये लालायित होना चाहिये।
- प्रार्थना में तैयारी: हर एक सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश प्रार्थना में तैयार किया जाना चाहिये।
- प्रार्थना में शुद्धिकरण: प्रार्थना में, आप अपनी अंतरंग आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं, अपने पापों का अंगीकार कर सकते हो, और परमेश्वर के सम्मुख सही मनोवृत्ति प्राप्त कर सकते हो।
- प्रार्थना में परमेश्वर की अगुवाई: प्रार्थना आपकी सहायता करती है कि परमेश्वर की अगुवाई को पहचान सकें।
- प्रार्थना में निरंतरता: प्रार्थना, संदेश को प्रचार करते समय, आमंत्रण देते समय, लोगों के द्वारा प्रत्युत्तर दिये जाते समय, नये विश्वासियों को सलाह देते समय भी चलती रहनी चाहिये।

1. सामर्थ के साथ प्रार्थना: "प्रबल प्रार्थना निरंतर की सामर्थ लाती है" - डॉ. बिली किम

1.1. मूसा ने प्रार्थना की और लाल समूद्र खुल गया।

1.2. अब्राहम ने प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे पुत्र दिया।

1.3. यहोशू ने प्रार्थना की और बलवान नगरों ने उसके आक्रमण के आगे समर्पण कर दिया।

1.4. दाऊद ने प्रार्थना की और गोलियत को मारने में परमेश्वर ने उसकी सहायता की।

1.5. एलिय्याह ने प्रार्थना की और स्वर्ग से आग नीचे आई।

1.6. दनिय्येल ने प्रार्थना की और सिंहों से बचाया गया।

1.7. पौलुस ने प्रार्थना की और बंदिगृह के दरवाजे अपने कब्जों से हिल गये।

1.8. "प्रार्थना को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है; उसके लिये नित्य प्रयोग की आवश्यकता है" --किम याकूब 5:6

2. तैयार हो जाने के लिये प्रार्थना करें

2.1. प्रार्थना का समय होता है, प्रतिदिन बिना रुकावट के, बिना जल्दबाजी के प्रार्थना करना। यूहन्ना 17

2.2. यह पाप अंगीकार करने, मनन करने, समझने, प्रेरणा पाने का और परमेश्वर से उत्तरों को पाने का समय होता है।

2.3. डॉ. विलियम वेल्डन प्रार्थना के लिये यह सुझाव देते हैं जिसमें हर एक भाग के लिये 12 मिनट दिया जाये: (1) व्यक्तिगत शुद्धता के लिये प्रार्थना, (2) उपदेश को विकसित करने के बारे में प्रार्थना, (3) श्रोताओं के लिये प्रार्थना, (4) आमंत्रण दिये जाने के संबंध में प्रार्थना।

2.4. एक नोटबुक रखें जिसमें प्रार्थना के लिये बिनतियां और प्रार्थना के मिले हुये उत्तरों को लिखा जाये; यह

आपके लिये एक स्मारक होगा कि आपको अपने परमेश्वर और लोगों के प्रति समर्पण को स्मरण दिलाये और प्रार्थना को मिले हुये उत्तरों के द्वारा परमेश्वर के सामर्थ की गवाही हो। यहोशू 4:1-7

2.5. आत्माओं के लिये संघर्ष करना एक आत्मिक बात है जिसके लिये यीशु को अपना प्राण देना पड़ा। लूका 22:41-44

3. शुद्धता के लिये प्रार्थना करें

3.1. हर एक उपदेशक के जीवन में व्यक्तिगत पवित्रता होना यह एक महत्वपूर्ण गुण है।

3.2. उपदेशक का जीवन उसके द्वारा प्रचार की जाने वाली बातों के विपरीत न हो। लूका 11:1-13

3.3. दाऊद ने शुद्ध हृदय के लिये प्रार्थना की; उपदेशक भी ऐसे ही अपने लिये मांगे। भजन संहिता 51:10-13

4. अच्छे से प्रचार किये जाने के लिये प्रार्थना करें

4.1. सर्वोत्तम संदेश वे होते हैं जिन्हें उपदेशक पहले अपने जीवन में लागू करता है।

4.2. शास्त्रपाठ के पढ़े जाने, प्रस्तुत किये जाने और समझे जाने के लिये प्रार्थना करें।

4.3. उपदेश की स्पष्ट, विभिन्न, और सरल क्रमबद्धता के लिये प्रार्थना करें।

4.4. उपदेश को परमेश्वर के लिये बलिदान के रूप में प्रस्तुत करें।

5. श्रोताओं के लिये प्रार्थना करें

5.1. श्रोताओं के हृदयों के लिये प्रार्थना करें और इसके लिये भी कि वे ग्रहण करने वाले होंगे।

5.2. रुकावटों को दूर किये जाने के लिये प्रार्थना करें ताकि लोग पवित्र आत्मा को स्वतंत्रता देंगे।

6. आत्माओं को जीते जाने के लिये प्रार्थना करें

6.1. संदेश के अंत में की जाने वाली प्रार्थना सब से अधिक महत्वपूर्ण होती है।

6.2. जब उपदेशक यह श्रोताओं को प्रत्युत्तर के रूप में कुछ करने के लिये बता देता है, उसके बाद उसे प्रार्थना करनी चाहिये कि परमेश्वर आत्माओं को जीतने का अपना ईश्वरीय कार्य पूरा करेगा।

6.3. उपदेशक को आवश्यकता नहीं है कि आगे आने के लिये अपने श्रोताओं पर दबाव डाले, पवित्र आत्मा को उसका काम करने दें, अन्यथा उनका "परिवर्तन" स्थायी नहीं होगा।

6.4. बजाय इसके कि आगे आने के लिये लोगों की खुशामद करें, परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर रहें कि लोगों को कायल करेगा और निर्णय के लिये मनायेगा।

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश कैसे तैयार करें?
सामग्री को क्रमबद्ध करना

प्रस्तावना

- अब खोज आरंभ होती है: विषय चुनना, जानकारी एकत्र करना, और विचारों को क्रमबद्ध करना।
- केंद्रिय मूल-विषय को, संदर्भ को और आप किन श्रोताओं को उपदेश देंगे ये ध्यान में रखें।
- परमेश्वर से मांगें कि आपको मुख्य संदेश प्रदान करे, और तब उस केंद्रिय मूल-विषय का समर्थन करने के लिये अपने मुख्य बिन्दुओं को क्रमबद्ध करें।
- कुछ उपदेशक, प्रचार के एक मिनट की तैयारी में एक घंटा देते हैं।

1. संदेश तक पहुंचना

1.1. एक अच्छा संदेश, परमेश्वर के वचन की उपजाऊ भूमि में एक पौधे के समान बढ़ता है।

1.2. चुने गये शास्त्रभाग में से मुख्य सच्चाइयों/सिद्धांतों की सूची लिख लें।

1.3. उसके बाद, उन सच्चाइयों के साथ आप जिन विचारों को जोड़ते हैं उन्हें लिख लें।

1.4. उन विचारों को एक दूसरे के साथ जोड़ते हुये उनके समूह बना लें, अभी उन्हें क्रम में न लगायें।

2. सामग्री को छांटना

2.1. तथ्य: कौन? क्या? कहां? कब? --नाम, घटनायें, समय, और स्थान

2.2. अर्थ: कैसे? क्यों? तथ्यों का विश्लेषण करें। इसके बाद क्या हुआ? किस के कारण क्या हुआ?

2.3. कड़ियां जोड़ना: दो वचनों के मध्य या दो विचारों के मध्य जिनमें एक समान विषय होगा

2.4. कार्यवाहियां: बाहरी बदलाव, लागूकरण, सत्य को व्यवहार में लाने के तरीके

2.5. मूल्य: भीतरी बदलाव, दृष्टिकोण में बदलाव, किसी और तरीके से देखने का ढंग

2.6. परिणाम: वह एक बात जो आप अपने संदेश से बताना चाहते हैं

3. रूपरेखा: उसे आकार/रूप देना

3.1. प्रस्तावना: आपके संदेश का उद्देश्य एक वाक्य में लिखें, उसे शास्त्रभाग से केंद्रिय मूल-विषय का सहारा दें, यह भी एक वाक्य में ही हो।

3.2. मुख्य भाग के बिन्दु: प्रत्येक मुख्य विचार को एक वाक्य में लिखें।

3.3. मुख्य भाग के बिन्दुओं के उपभाग: प्रत्येक मुख्य विचार के नीचे उन सारे विचारों को लिखें जो उसे स्पष्ट करते हों।

3.4. उपसंहार: आपके श्रोताओं के लिये संदेश से दिये जाने वाले सब से महत्वपूर्ण व्यावहारिक लागूकरण को एक वाक्य में लिखें।

4. प्रस्तावना: प्रस्तुतिकरण आरंभ करना

4.1. आपके उपदेश के प्रथम शब्द निर्धारित करेंगे कि कोई आपकी बात सुनेगा या नहीं।

4.2. कहानी: यदि आप कोई कहानी बताते हैं तो वह अवश्य ही मूल-विषय तथा उद्देश्य से मेल खाती हो।

4.3. उद्धरण: एक और तरीका है कि किसी उद्धरण से आरंभ करें; इससे अधिकार प्रगट होता है।

4.4. मूल-विषय: यदि आप मूल-विषय को बताते हुये आरंभ करते हैं तो वह वाक्य प्रभावशाली और चित्ताकर्षक हो।

5. उपदेश का मुख्य भाग: उपदेश में आगे बढ़ते जाना

5.1. उपदेश के सारे भाग और उपभागों में अपने मूल-विषय को थामें रहने में विश्वासयोग्य रहें।

5.2. अपने लक्ष्य को बिना भूले, प्रत्येक बिन्दु और प्रत्येक बिन्दु के उपभागों को विकसित करें।

5.2.1. उत्सुकता को बनाये रखें: प्रत्येक उपभाग के द्वारा एक नयी बात बतायें। लूका 15:11-32

5.2.2. विषमताओं का उपयोग करें: जैसे कि दो मनुष्य जिन्होंने अलग-अलग नेंव पर घर बनायें। लूका 6:48-49

5.2.3. तुलनाओं का उपयोग करें: जसे कि, "परमेश्वर का राज्य .... के समान है. ..." मत्ती 5-7

5.2.4. वस्तुओं से उदाहरण दें: सिक्का, मंदिर ..... मत्ती 22:19-21, यूहन्ना 2:18-22

6. भाषण योग्यता के प्रमुख नियमों को स्मरण रखें

6.1. बोलते समय अपनी स्वर-शैली, गति और आवाज की तीव्रता को बदलते रहें।

6.2. प्रत्येक मुख्य बिन्दु के साथ श्रोताओं के जीवन से जुड़ने वाला उदाहरण दें।

6.3. अपने संदेश के लिये आपका उत्साह तथा दृढ़ निश्चय व्यक्त होने दें।

7. उपसंहार या समापन: अंत को पहुंचना

7.1. उपसंहार श्रोताओं को तैयार करता है कि जो उन्होंने सुना है उसके प्रति प्रत्युत्तर दें।

7.2. उपसंहार दृढ़ निश्चयी और आशावादी, सकारात्मक प्रत्युत्तर को प्रोत्साहन देने वाला हो।

7.3. उपसांहर में मुख्य बिन्दुओं का सार दे सकते हैं, या मुख्य विषय से संबंधित कहानी, या प्रार्थना के साथ समाप्त कर सकते हैं।

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश कैसे तैयार करें?
संदेश प्रचार के प्रकार

प्रस्तावना

- उपदेश के सर्वसामान्य आकार तथा मुख्य विचारों की कल्पना करना किसी के हड्डियों के ढांचे का निर्माण करने के समान होता है।
- उपदेश के विभिन्न पहलुओं को एकत्र करना और क्रमबद्ध करना उस हड्डियों के ढांचे पर मांसपेशियों को चढ़ाने के समान होता है।
- आपके प्रस्तुतिकरण का तरीका उस खाल के समान होता है जो मांसपेशियों तथा हड्डियों के ढांचे को ढक लेती है। उपरोक्त तीनों घटक बराबरी का महत्व रखते हैं।

1. वृत्तांतमय उपदेश

1.1. कुछ उपदेश बाइबल से किसी वृत्तांत को बताने जैसे हो सकते हैं। ऐसे उपदेश मुख्यत: अशिक्षित मौखिक श्रोताओं के मध्य चित्ताकर्षक ठहर सकते हैं।

1.2. वृत्तांतमय उपदेशों में एक केंद्रिय बिन्दु होना आवश्यक होता है। बाइबल के कुछ वृत्तांत बहुत अधिक लम्बे हो सकते हैं। तब मात्र उन्हीं बिन्दुओं को बतायें जो आपके संदेश के लिये अनिवार्य और उपयुक्त होंगे।

1.3. यीशु के द्वारा बताये गये दृष्टांत (भौतिक कहानियां) वृत्तांतमय उपदेश थे जिनमें स्वर्गीय अर्थ छिपा होता था।

2. व्याख्यात्मक उपदेश

2.1. व्याख्या का अर्थ "स्पष्टीकरण" होता है; व्याख्यात्मक उपदेश शास्त्रभाग को स्पष्ट करता है।

2.2. संदर्भ का ध्यान रखा जाता है; शास्त्रभाग को उसके समय, स्थान तथा संदर्भ में स्पष्ट किया जाता है।

2.3. इस प्रकार के उपदेश में बहुत खोज, गहराई और सुनिश्चितता आवश्यक होती है।

2.4. सुसमाचार न मात्र नया नियम के शास्त्रभागों से परंतु पुराना नियम के शास्त्रभागों से भी प्रस्तुत किया जा सकता है, जैसे कि: 1 राजा 17; 2 राजा 5; लूका 4:24-27

3. पाठ-विषयक उपदेश

3.1. पाठ-विषयक उपदेश एक ही छोटे शास्त्रभाग का विश्लेषण करता है, जिसमें एक ही विचार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

3.2. उपदेश की रूपरेखा विचारों के उसी क्रम को लेती है जो उस शस्त्रभाग में होता है।

3.3. यीशु ने पहाड़ी पर से 6 पाठ-विषयक उपदेश प्रचार किये। मत्ती 5:21, 27, 31, 33, 38, 43

4. विषयसंबंधी उपदेश

4.1. किसी एक विषय पर उपदेश देना जिसमें बाइबल के विभिन्न शास्त्रभागों से सहायता ली जाती है।

4.2. पौलुस ने, "दण्ड की आज्ञा नहीं" इस विषय पर 4-बिन्दुओं वाला उपदेश दिया। रोमियों 8:1-16

4.2.1. उसने व्यवस्था की निर्बलता और मसीह की सामर्थ्य में भेद बताया।रोमियों 8:1-4

4.2.2. उसने शारीरिक बातों पर मन लगाने वाले और आत्मिक बातों पर मन लगाने वालों में भेद बताया। रोमियों 8:5-11

4.2.3. उसने मसीहियों में काम करने वाले जीवन और अविश्वासियों में काम करने वाली मृत्यु में भेद बताया। रोमियों 8:12-14

4.2.4. उसने मसीहियों को प्राप्त आशा और अविश्वासियों के लिये ठहराये गये भय में भेद बताया। रोमियों 8:15-16

5. जीवन-चरित्र-विषयक उपदेश

5.1. यह किसी के जीवन पर आधारित उपदेश होता है, प्राय: बाइबल के किसी प्रसिद्ध चरित्र पर। उदाहरण:

5.1.1. राजा शाऊल: उसने अच्छा आरंभ तो किया परंतु परमेश्वर से पीछे हट गया और सबकुछ खो दिया।

5.1.2. पौलुस: उसने राजा अग्रिप्पा के सामने आत्मचरित्र-रूपि संदेश दिया। प्रेरितों 26

5.2. बाइबल के अप्रसिद्ध लोगों के चित्ताकर्षक उदाहरणों की उपेक्षा न करें, जैसे कि:

5.2.1. मपीबोशेत, मरे हुये राजा शाऊल के घराने का एक अपंग। 2 शमूएल 9

5.2.2. बरनबास, "शान्ति का पुत्र" जो पौलुस और मरकुस का सलाहकार रहा।

6. घटना-संबंधी उपदेश

6.1. पौलुस, परमेश्वर के अनुग्रह का उदाहरण स्पष्ट करने के लिये, अपने जीवन की घटना बताता है। 2 कुरिंथियों 12:1-10

6.1.1. परमेश्वर का अनुग्रह, हमारे मानवीय क्लेशों के प्रति दिया गया उसका प्रत्युत्तर है।

6.1.2. परमेश्वर का अनुग्रह, हमें क्लेश देने वाली किसी भी बात को संभाल लेने के लिये पर्याप्त है।

6.1.3. परमेश्वर का अनुग्रह, जीवन के प्रति हमें नये दृष्टिकोण देने का आधार बन जाता है। 2 कुरिं 5:17

6.2. यीशु की परीक्षा, पानी पर चलना या उसका पुन:रुत्थान ये घटना संबंधी-उपदेश हो सकते हैं।

7. शब्द-संबंधी उपदेश

7.1. यह अच्छा होता है कि कभी-कभी पवित्रशास्त्र के किसी महत्वपूर्ण शब्द पर प्रचार करें, ऐसे शब्दों पर जो अर्थ से भरपूर है।

7.2. "आमेन" (ऐसी ही हो!) पर उपदेश देना एक उत्तम उदाहरण हो सकता है।

7.2.1. यह परमेश्वर के साथ हमारी सहमति को दर्शाता है: आप परमेश्वर के बारे में किस बात पर सहमत हो?

7.2.2. यह परमेश्वर में हमे प्राप्त आश्वासन को दर्शाता है: परमेश्वर में आपको प्राप्त आश्वासन में क्या-क्या है?

7.2.3. यह परमेश्वर से हमें जो आशा है उसे दर्शाता है: आप क्या आशा करते हो कि परमेश्वर हमारे लिये करेगा?

7.2.4. यह परमेश्वर के लिये हमारे कार्य को दर्शाता है: आप परमेश्वर के लिये क्या करेंगे?

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश में कौन भागीदार होता है?

प्रचारक

प्रस्तावना

- परमेश्वर के प्रेम और उद्धार की घोषणा करने के लिये एक मानवीय संदेशवाहक आवश्यक होता है।
- वह संदेशवाहक अवश्य ही ऐसा होना चाहिये जिसने परमेश्वर की क्षमा का अनुभव किया है, जो प्रभु के द्वारा बुलाया गया और भेजा गया है, और जो पवित्र आत्मा के प्रेम और सामर्थ्य से भरा हुआ है।
- वह संदेशवाहक अवश्य ही ऐसा होना चाहिये जिसे निश्चय है कि परमेश्वर ने उसे खोये हुओं को अपने उद्धार की घोषणा करने के लिये बुलाया है।

1. पौलुस - एक आदर्श प्रचारक

1.1. क्योंकि वह दीनता के साथ परमेश्वर के पास आया (उसने अपनी निर्बलता को पहचाना)। 1 कुरिंथि 2:3

1.2. क्योंकि वह सताव के बावजूद बना रहा।

2. प्रचारक की बुलाहट

2.1. प्रचारक परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत रिश्ते में, पवित्र आत्मा से भरा हुआ बना रहता है।

2.2. प्रचारक ''चुना हुआ पात्र'' होता है। प्रेरितों 9:15

2.3. प्रचारक, परमेश्वर के द्वारा अलग किया हुआ होता है कि उसके वचन का प्रचार करेगा। इफिसियों 4

2.4. प्रचारक इच्छुक होता है कि जो परमेश्वर कहेगा उसे करेगा। मत्ती 7:21-23

2.5. प्रचारक के पास परमेश्वर का उत्तर होता है: ''प्रभु! तू क्या चाहता है कि मैं करूं?'' लूका 4:1

2.6. प्रचारक के मन में एक ही बात होती है: मसीह को जाने और उसी का प्रचार करे। 1 कुरिंथि 2:2

2.7. प्रचारक ने निर्बलता में सामर्थ्य को पाया होता है। 1 कुरिंथि 2:4

2.8. प्रचारक के मन में निर्बल विश्वासियों के प्रति बोझ होता है। 2 कुरिंथि 11:28-29

2.9. प्रचारक के मन में क्लेशों के मध्य भी आनंद होता है। 2 कुरिंथि 12:1-10

2.10. प्रचारक निष्कपट होता है और अपनी निर्बलताओं को मानता है।

2.11. प्रचारक विशेषताओं का नमूना नहीं होता है परंतु परमेश्वर पर निर्भर रहने का आदर्श होता है।

2.12. प्रचारक के मन में, अनेक कारणों के कारण, अपनी बुलाहट के प्रति प्रश्न हो सकता है:

2.12.1. कलीसिया के भीतर तथा बाहर से आलोचना की जाना
2.12.2. अन्य प्रचारकों के साथ अनुचित तुलना की जाना
2.12.3. लम्बे समय तक काम करने के बाद भी बहुत कम परिणाम प्राप्त होना
2.12.4. अन्य लाभप्रद उपक्रमों की जिम्मेवारी तुरंत ले लेने की बुलाहट लगना
2.12.5. शारीरिक बिमारी या पारिवारिक समस्यों का होना

3. प्रचारक का विश्वास

3.1. प्रचारक का आश्चर्यकर्मों में विश्वास होता है।

3.2. प्रचारक को उन्नत मसीही श्रोताओं का समर्थन तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

3.3. प्रचारक मसीहियों को प्रेरणा देता है कि परमेश्वर से किये गये समर्पण को स्मरण रखें।

3.4. प्रचारक अन्य मसीहियों को प्रेरणा देता है कि वे अपने उपेक्षा करने के पापों को कबूल करें।

3.5. प्रचारक, खोये हुओं के प्रति जागरूक चिंता व्यक्त करता है। 1 कुरिंथि 1-21-23

3.6. प्रचारक चतुराई, वाक्पटुता या गतिशीलता पर निर्भर नहीं करता है।

3.7. प्रचारक अपने संदेश को सामर्थी बनाने के लिये परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर रहता है।

3.8. प्रचारक, परमेश्वर के आत्मा के विरुद्ध होने वाले शैतानी युद्ध के प्रति जागरूक तथा तैयार रहता है।

3.9. प्रचारक जानता है कि परमेश्वर बड़ी-बड़ी आत्मिक विजय को प्राप्त करेगा। 1 यूहन्ना 3:8; मत्ती 16:18

3.10. प्रचारक जानता है कि जब वह आमंत्रण देता है, तब आत्मिक युद्ध अपने चरमसीमा पर होता है क्योंकि परमेश्वर पापियों के ऊपर के शैतान के बंधन को तोड़ता होता है।

3.11. प्रचारक प्रतिउत्तर की मात्र ''आशा'' ही नहीं करता। वह उसके लिये प्रार्थना और कार्य करता है।

3.12. प्रचारक परमेश्वर पर भरोसा करता है कि वह अपने वचन के उद्देश्य को पूरा करेगा।

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश में कौन भागीदार होता है?
श्रोतागण

प्रस्तावना

- परमेश्वर जानता है कि प्रत्येक श्रोता के आत्मा और मन में क्या हो रहा है।
- सुसमाचार-प्रचारक को चाहिये कि ऐसे ही विचारों और भाषा का उपयोग करे जो श्रोता समझ सकते हैं। इसके लिये प्रचारक को श्रोताओं की संस्कृति एवं परिस्थिति को अच्छे से जान लेना चाहिये।
- जब श्रोताओं में विभिन्न प्रकार के लोग हों तो प्रचारक को चाहिये कि जो बातें सब के लिये सामान्य होगी उन पर अनुरोध करे।
- हम जीवन में जितने भी निर्णय लेते हैं उन सब में मसीह के पीछे चलने का निर्णय सब से महत्वपूर्ण है।

1. मनुष्य स्वभाव को समझना

1.1. सुसमाचार-प्रचारक को उन पांच सामान्य लक्षणों को स्मरण रखना चाहिये जो सब मनुष्यों में होते हैं। सब मनुष्य इन निम्नलिखित बातों का अनुभव करते हैं:

1.1.1. **अनंतकाल संबंधीत आवश्यकता:** जीवन की आवश्यकताओं को सामाजिक सुधार या भौतिक समृद्धि के द्वारा ही पूरी रीति से पूरा नहीं किया जा सकता।

1.1.2. **खालीपन:** उस हर एक जीवन में जो मसीह के बिना है एक महत्वपूर्ण खालीपन होता है।

1.1.3. **अकेलापन:** हम अपने श्रोताओं में अकेलेपन की कल्पना कर सकते हैं (जगत संबंधी अकेलापन)

1.1.4. **दोषबोध का अनुभव:** हम उन लोगों से बात करते हैं जिन्हें दोषबोध का अनुभव या पहचान है।

1.1.5. **मृत्यु का भय:** सब को, व्यापक स्तर पर, मृत्यु का भय लगता ही है।

1.2. सुसमाचार-प्रचारक के पास अपने श्रोताओं के लिये उपयुक्त संदेश होता है क्योंकि उसके पास अपने श्रोताओं की आवश्यकता के लिये आशादायक उत्तर होता है।

1.3. सुसमाचार-प्रचारक अपने श्रोताओं के मूल्य, नैतिकता, आचार-व्यवहार और प्राथमिकताओं के प्रति संवेदनशील होता है।

1.4. सुसमाचार-प्रचारक अपने श्रोताओं के साथ समय बिताता है कि उनकी सर्वसामान्य गहन आवश्यकता को समझ सके।

1.5. यीशु ने भीड़ को देखा और उनकी आवश्यकताओं को समझा। मरकुस 12:37

2. श्रोतागण को अनुरोध करना

2.1. सुसमाचार-प्रचारक अपने संदेश को प्रतिदिन के जीवन के दृश्यों को जोड़ते हुये समझाता है।

2.2. सुसमाचार-प्रचारक जानता है कि मसीह यीशु का सुमाचार यह सब समयों में सर्वश्रेष्ठ कहानी है।

2.3. ई, स्टेनली जोन्स का कहना है कि यूहन्ना 3:16 के शब्द ''इतिहास के सब से महत्वपूर्ण शब्द हैं।''

2.4. जिम इलीयोट ने कहा है कि वह एक ही मार्ग पर का संकेतचिन्ह नहीं होना चाहता है परंतु मुख्य मार्ग के दाएं या बाएं छोर के साथ-साथ ऐसे जाना चाहता है कि लोग जो उसके जीवन को देखेंगे तो इस ओर या उस ओर, (स्वर्ग की ओर या नरक की ओर), जाने के निर्णय का सामना करेंगे।

2.5. प्रचारक अपने स्वर, हाव-भाव, गति, तीव्रता, प्रदर्शन, शैली और उदाहरणों में विभिन्नता ला सकता है ताकि श्रोताओं के ध्यान को आकर्षित रखे।

2.6. सुसमाचार-प्रचारक उदाहरणों, शब्द-चित्र और गवाहियों का उपयोग करता है कि श्रोताओं से जुड़ा रह सके और उन्हें यीशु की सामर्थ्य और पुन:रुत्थान को समझने में सहायता करे।

2.6.1. यीशु के आश्चर्यकर्मों की गवाही यीशु के सामर्थ्य को प्रमाणित करती है - यूहन्ना 20:31

2.6.2. पुनरुत्थान की गवाही यीशु के सामर्थ्य को प्रमाणित करती है - यूहन्ना 20:25-27

2.6.3. अन्धे व्यक्ति की गवाही यीशु के सामर्थ्य को प्रमाणित करती है - यूहन्ना 9:25, 32-33

3. लोगों को सही निर्णय लेने में सहायता करने के तीन तरीके

3.1. उन्हें बताई गई सच्चाइयों पर विचार करने कहे।

3.1.1. लोग पाप में खोये हुये हैं।

3.1.2. उन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

3.1.3. परमेश्वर उनसे प्रेम करता है।

3.1.4. उसने उद्धारकर्ता यीशु भेजा है जो पापों की क्षमा और अनंत जीवन देता है।

3.1.5. अवश्य है कि लोग, मसीह यीशु में दिये गये परमेश्वर के प्रस्ताव को स्वीकार करने का निर्णय लें।

3.1.6. यदि वे परमेश्वर के प्रस्ताव को स्वीकार करने से इन्कार करते हैं तो वे उससे हमेशा के लिये दूर कर दिये जायेंगे।

3.2. उन सच्चाइयों के आधार पर उन्हें निर्णय लेने कहे।

3.2.1. आप लोगों को यह नहीं कह रहे हैं कि किसी विशिष्ट तरीके का अनुभव करें परंतु यह अपनी इच्छा से निर्णय लेना होता है।

3.2.2. भावनात्मक रीति से की गई पसंद अक्सर बदल जाती है जब भावनाएं बदल जाती हैं।

3.3. उन्हें कहे कि निर्णय लेने का समय **अभी** है।

3.3.1. यह टाला जा सकने वाला निर्णय नहीं है, क्योंकि जीवन का कोई भरोसा नहीं है।

3.3.2. एक बार हम मर जायें तब फिर यीशु से अपने पापों की क्षमा नहीं मांग सकते और उसे अपने हृदय में ग्रहण नहीं कर सकते।

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश में कौन भागीदार होता है?

सलाहकर

प्रस्तावना

- जब अविश्वासी श्रोतागण, प्रचारक के आमंत्रण को प्रतिउत्तर देते हैं कि मसीह में पापक्षमा और अनंत जीवन को प्राप्त करेंगे तब यह बहुत महत्वपूर्ण होता है कि साथ में अच्छे प्रशिक्षित सलाहकारों का समूह हो ताकि प्रतिउत्तर देने वालों से भेंट करें और उनके साथ प्रार्थना करें और प्रभु को अपना हृदय देने की प्रक्रिया में उनकी सहायता करें।
- सलाहकरों के समूह को प्रशिक्षित किया जाता है क्योंकि प्रचारक हर एक खोजी व्यक्ति से भेंट नहीं कर सकता।

1. सलाहकारों को कैसे चुना जाये - वे ऐसे विश्वासी होने चाहिये....

1.1. जो मसीह में नये जीवन का व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त किये हैं।

1.2. जिनका अपने विशिष्ट काम के प्रति उद्देश्यपूर्ण समर्पण है: वे सहायक होते हैं, विशेषज्ञ नहीं।

1.3. जिनमें दृढ़ता की आत्मा हो: उन्हें लोगों के प्रश्न, हिचकिचाहट, और बहानों को सहने योग्य होना चाहिये।

1.4. जिनमें मानवीय रिश्तों के संबंध में उचित कुशलता हो: अवश्य है कि वे अच्छे सुननेवाले हो।

2. विश्वासियों को अच्छे सलाहाकार के रूप में कैसे प्रशिक्षित किया जाये

2.1. **मध्यस्थी की प्रार्थना करने का अभ्यास करने के द्वारा**

2.1.1. उनके मन में खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने की गहरी इच्छा होनी चाहिये। रोमियों 10:1

2.1.2. अवश्य है कि वे नियमित रीति से प्रार्थना करें। हम लोगों से परमेश्वर के बारे में बात करे इससे अधिक अवश्यकता यह है कि हम परमेश्वर से लोगों के बारे में बात करें। 1 थिस्स. 5:17; 1 शमूएल 12:23

2.2. **पवित्रशास्त्र को मुखाग्र करने के द्वारा**

2.2.1. आवश्यक है कि वे वचन की तलवार को उपयोग करने में कुशल हों। इफि. 6:17; इब्रा. 4:1

2.2.2. सुसमाचार से संबंधित बाइबल वचनों को मुखाग्र करने का कोई सुनियोजित योजना होनी चाहिये।

2.2.3. उदाहरण: मत्ती 11:28; यूहन्ना 3:16; 6:37; 7:37-38; रोमियों 3:23; 6:23; 8:1; 10:9; 1 यूहन्ना 4:10

2.3. **मनुष्य स्वभाव को समझना सीखने के द्वारा**

2.3.1. उन्हें सक्षम होना चाहिये कि वे खोजियों की चिंताओं और विचारों को पहले से सोच सकेंगे।

2.3.2. उन्हें सक्षम होना चाहिये कि वे उन व्यापक लक्षणों को पहचान सकेंगे जो हम सब में सामान्य रीति से होते हैं।

2.3.3. उन्हें चाहिये कि वे अपनी स्वयं की भी व्यक्तिगत आत्मिक खोज को स्मरण रखें।

2.3.4. आवश्यक है कि वे उन बातों को पहचान सकें जिनमें खोजियों की रुचि होती है।

2.3.5. आवश्यक है कि वे समझे कि खोजियों की परिस्थिति कोई क्यों न हो उन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

2.4. **सम्प्रेषण की अच्छी कुशलताओं को विकसित करने के द्वारा**

2.4.1. आवश्यक है कि वे आत्मिक सच्चाइयों को उस भाषा में स्पष्ट कर सकें जो खोजियों को समझ में आयेगी।

2.4.2. उन्हें व्यक्तिगत स्तर पर सुसमाचार सुनाने की पद्धतियों को सीखना आवश्यक होगा: पांच उंगलियों द्वारा, रोमी रास्ता, इत्यादि

2.4.3. आवश्यक है कि वे खोजियों के समक्ष इन बुनियादी बातों को रखें:

2.4.3.1. वीकार करो कि आप पापी हो।

2.4.3.2. विश्वास करो कि यीशु आपके लिये मरा।

2.4.3.3. अपना जीवन यीशु को समर्पित करो।

2.4.4. आवश्यक है कि वे धर्मविज्ञान की भाषा नहीं परंतु स्पष्ट और सरल भाषा का उपयोग करें।

2.4.5. इस सेवकाई के लिये लगातार प्रशिक्षण दिया जाता रहना चाहिये, चाहे कोई उत्तम अनुभवी सलाहाकार ही क्यों न हो।

3. सलाहकारों को कैसे उपयोग में लाया जाये

3.1. जब कि सुसमाचार का संदेश प्रचार किया जाता हो तब वे प्रार्थना में लगे रहें कि बहुतायत का फल आये।

3.1.1. प्रचार किये जाने के दौरान प्रार्थना करने के लिये उनके पास एक शांत स्थान होना चाहिये।

3.1.2. ''प्रार्थना त्रिकुट'' एक प्रभावी तरीका है जिसमें तीन सलाहकार मिलकर प्रत्येक जन तीन-तीन खोये हुये लोगों के लिये प्रार्थना करता है।

3.2. अवश्य है कि वे खोजियों को सुसमाचार स्पष्ट करें: वे निश्चित करें कि खोजियों ने पश्चाताप और विश्वास को समझा है।

3.3. वे विश्वास की प्रार्थना करने का प्रोत्साहन दें: वे निश्चित रीति से खोजी व्यक्ति की सहायता करें की वह परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा मांगे और अपनी आत्मा को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

3.4. वे नये विश्वासी को परमेश्वर के परिवार से जोड़ें: वे नये विश्वासी को कलीसिया में आमंत्रित करें और निश्चित करें कि उस नये विश्वासी को इस नये विश्वासी शिक्षा दी जाये।

3.5. वे नये विश्वासी की आत्मिक वृद्धि में अगुवाई करें और निश्चित करें कि वे अन्य विश्वासियों के साथ संगति प्राप्त करें।

3.6. वे अवश्य ही नये विश्वासी की सहायता करें कि वह आत्मा-जीतने वाला बनेगा: नये विश्वासी में पवित्र आत्मा का जीवन विकास कर रहा है इस का पक्का चिन्ह यह होता है कि वह अन्य लोगों को यीशु के पास लाने के लिये आतुर रहता है।

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश में कौन भागीदार होता है?
पवित्र आत्मा

प्रस्तावना

- एक प्रचारक के लिये यह सब से बड़ी खतरे की बात होती है यदि वह अपनी कुशलता में भरोसा करता है, बजाय इसके कि परमेश्वर के आत्मा में भरोसा करें।
- सुसमाचार का प्रचार प्रभावकारी होने में मात्र ज्ञान और क्षमता पर्याप्त नहीं होती है। सुसमाचार का प्रचार करने के लिये पवित्र आत्मा के अभिषेक की आवश्यकता होती है। यशायाह 61; लूका 14:14-21
- पवित्र आत्मा चाहता है आप पवित्रशास्त्र को समझें (यूहन्ना 16:13); खोजियों को शिष्य बनायें (मत्ती 28:19); उस पर निर्भर रहें कि वह आपको आवश्यक शब्द देगा (लूका 21:15); और दृढ़ विश्वास रखें कि आपका संदेश उसका है कि ग्रहणशील हृदयों को स्पर्श करे (प्रेरितों 2:37)।

1. अवश्य है कि प्रचारक परमेश्वर के आत्मा से भरा हुआ हो.

1.1. यीशु ने पवित्रशास्त्र के अधिकार का दावा किया और वह पवित्र आत्मा से भरा हुआ था।

1.2. पौलुस ने अपनी देह को पवित्र आत्मा की इच्छा के अधिन कर दिया था। 1 कुरिंथि 6:19-20; 9:27

1.3. यह महत्वपूर्ण है कि सुसमाचार-प्रचारक परमेश्वर की सेवकाई पूरी करने के लिये परमेश्वर की सहायता मांगे।

1.3.1. अवश्य है कि वह अपने स्वयं के उद्धार के विषय में तथा मसीह में प्राप्त अधिकार के विषय में निश्चित हो। भजन 51:12-13; लूका 4:32

1.3.2. अवश्य है कि वह अपने पापों को मान ले। 1 यूहन्ना 1:7-10; 2 तीमु. 2:21

1.3.3. अवश्य है कि वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो। लूका 11:26; 22:42; इफि 5:18

1.3.4. अवश्य है कि वह परमेश्वर के हाथ में एक साधन के रूप में, नम्र तथा परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित हो।

2. उपदेश के लिये प्रेरणा

2.1. पवित्र आत्मा बाइबल का ईश्वरीय लेखक है। 2 पतरस 2:21; 2 तीमु> 3:16

2.2. पवित्र आत्मा की सेवकाई उस हर एक सुसमाचार-प्रचारक के लिये उपलब्ध है जो प्रार्थना करता है। 2 कुरिंथि 10:4-5

2.3. उपदेश, शब्दों में किये जाने वाले आत्मिक युद्ध का प्रकार है, जिसके लिये साहस और क्षमता आवश्यक होती है।

2.4. अवश्य है कि प्रचारक वचन के अधिन हो, और ना कि वचन प्रचारक के अधिन!

2.5. उपदेश शुद्ध है या नहीं इसका निर्णय प्रचारक नहीं करेगा। प्रकाशित 22:18-19; 2 पतरस 1:20

2.6. मनुष्य का उपदेश शुद्ध उपदेश नहीं होता है, परंतु जो उपदेश परमेश्वर की ओर से होता है वह शुद्ध होता है। प्रेरितों 2:4; रोमियों 1:16

3. श्रोताओं की अगुवाई करना

3.1. पवित्र आत्मा श्रोताओं को तैयार करता है। यूहन्ना 16:8-11

3.2. पवित्र आत्मा प्रचारक के साथ मिलकर काम करता है।

3.3. प्रचार के दौरान, पवित्र आत्मा पाप के प्रति कायल करता है और अपने अद्‌भुत प्रभाव को काम में लाता है।

3.4. पवित्र आत्मा, सुननेवाले अविश्वासियों के लिये अपनी गवाही भी जोड़ता ताकि वे मसीह में प्राप्त उद्धार को स्वीकार करें।

3.5. पवित्र आत्मा उपदेश के हर एक भाग पर नियंत्रण रखता है।

4. आमंत्रण को आशीषित करना

4.1. आमंत्रण के दौरान, पवित्र आत्मा पापियों को बुलाता है।

4.2. सर्वज्ञानी परमेश्वर जानता है कि मनुष्यों के मन और हृदय में क्या है क्योंकि वह बाहरी रूप के परे देखता है। 1 शमूएल 16:7; यूहन्ना 2:25; रोमियों 8:26-27ट

4.3. पवित्र आत्मा के ही प्रेरणा से वचन लिखा गया है, और पवित्र आत्मा ही प्रचारकों और शिक्षकों को वचन का अर्थ बताता है।

4.4. लोग आमंत्रण का प्रतिउत्तर अलग-अलग तरीके से देते हैं, और पवित्र आत्मा हर एक खोजी को दिखायेगा कि वह किस प्रकार से प्रतिउत्तर दे।

4.4.1. कुछ ऐसे होते हैं जो उसे पहली बार ग्रहण करने आते हैं।

4.4.2. अन्य ऐसे होते हैं जो मात्र देखना चाहते हैं कि उसके पीछे चलने का अर्थ क्या है।

4.4.3. कुछ ऐसे होते हैं जो विश्वास से पीछे जा चुके होते हैं।

4.4.4. कुछ समस्याग्रस्त होते हैं और कुछ विशिष्ट आवश्यकता के साथ आते है कि उसके लिये प्रार्थना करें।

4.5. सुसमाचार-प्रचारक के लिये प्राथमिकता यह नहीं होती है कि लोगों से परमेश्वर के बारे में बात करे परंतु यह कि परमेश्वर से लोगों के बारे में बात करे।

4.6. यीशु ने अपने चेलों को सुसमाचार प्रचार की सेवकाई सौंप दी। यूहन्ना 20:21

4.7. सुसमाचार-प्रचारक की गवाही ''पृथ्वी की छोर तक'' पहुंचना है। प्रेरितों 1:8

मूल्यांकन फार्म

आगे के छः पृष्ठों में कुछ फार्म दिये हुये हैं जो प्रत्येक विद्यार्थी के लिये लाभदायक होंगे।

- पहला फार्म विद्यार्थी तथा उसके द्वारा अपना प्रचार-सलाहकार चुने गये व्यक्ति के मध्य का करारनामा है।
- दूसरा और तीसरा फार्म इसलिये है कि दो सुसमाचार-प्रचार उपदेशों को तैयार करने में विद्यार्थियों की सहायता करें।
- चौथा और पांचवा फार्म सलाहकार के लिये हैं कि विद्यार्थियों के उपदेशों का मूल्यांकन करते हुये रिपोर्ट प्रस्तुत करें।
- छठवां फार्म सलाहकार के द्वारा विद्यार्थियों के अंतिम निरीक्षण के लिये है।

मूल्यांकन
विद्यार्थी तथा सलाहकार का करारनामा

मेरे सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश के पाठ्यक्रम के लिये मैंने ---------- को अपना सलाहकार चुना है, जिनके निचे किये गये हस्ताक्षर दर्शाते हैं कि उन्होंने इस भूमिका को तथा उसकी जिम्मेवारियों को स्वीकार किया है। हम ने करार किया है कि सुझायी गई समय सारणी के अनुसार हम मिलते रहेंगे। मेरे अध्ययन तथा प्रचार के लिये नियुक्त किये गये अभ्यास को पूरा करने का समय मेरे नामांकन से लेकर लगभग छः माह के भीतर ठहराया गया है।

विद्यार्थी का नाम ----------

विद्यार्थी के हस्ताक्षर ----------

नामांकन की तारीख ----------

पूरा होने की तारीख ----------

सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश के पाठ्यक्रम को संतोषजनक तरीके से पूरा करने की मांगों को मैंने पढ़ लिया है, और मैं ऊपर नाम लिखे गये विद्यार्थी की प्रगति को समय-समय पर जांचता रहूंगा।

सलाहकार के हस्ताक्षर ----------

पदवी ----------

कलीसिया या संस्था ----------

विद्यार्थी के साथ रिश्ता (मित्र, पास्टर, ...?) ----------

मूल्यांकनः उपदेश क्रमांक 1 के लिये कार्य पत्रक

1. सामान्य जानकारी

1.1. प्रचारक का नाम .....

1.2. प्रचार करने की आयोजित तारीख .....

1.3. प्रचार करने का आयोजित स्थान .....

1.4. ठहराये गये श्रोताओं का प्रकार .....

2. उपदेश के लिये चुने गये शास्त्रभाग के घटक

2.1. तथ्य .....

2.2. अर्थ .....

2.3. कड़ियां .....

2.4. लागूकरण .....

2.5. महत्वपूर्ण बातें .....

2.6. परिणाम .....

3. उपदेश की प्रस्तावना (रूपरेखा में लिखें)

3.1. शीर्षक .....

3.2. मूल-विषय .....

3.3. शास्त्रभाग .....

3.4. उपदेश का लक्ष्य है:

3.4.1. मेरे श्रोताओं को विश्वास करने के लिये
समझाना (विचार) .....

3.4.2. उन्हें करने के लिये सहायता करना
(लागूकरण) .....

4. रूपरेखा का मुख्यभाग (कृपया सविस्तर तैयार की गई रूपरेखा को संलग्न करें)

4.1. बिन्दु .....

4.2. उपबिन्दु .....

4.3. हवाले .....

4.4. उदाहरण .....

5. आपके उपदेश का समापन

5.1. समापन के लिये विचार .....

5.2. समापन के लिये उदाहरण .....

5.3. आमंत्रण का प्रकार .....

मूल्यांकनः उपदेश क्रमांक 2 के लिये कार्य पत्रक

1. सामान्य जानकारी

1.1. प्रचारक का नाम .....

1.2. प्रचार करने की आयोजित तारीख .....

1.3. प्रचार करने का आयोजित स्थान .....

1.4. ठहराये गये श्रोताओं का प्रकार .....

2. उपदेश के लिये चुने गये शास्त्रभाग के घटक

2.1. तथ्य .....

2.2. अर्थ .....

2.3. कड़ियां .....

2.4. लागूकरण .....

2.5. महत्वपूर्ण बातें .....

2.6. परिणाम .....

3. उपदेश की प्रस्तावना (रूपरेखा में लिखें)

3.1. शीर्षक .....

3.2. मूल-विषय .....

3.3. शास्त्रभाग .....

3.4. उपदेश का लक्ष्य है:

3.4.1. मेरे श्रोताओं को विश्वास करने के लिये
समझाना (विचार) .....

3.4.2. उन्हें करने के लिये सहायता करना
(लागूकरण) .....

4. रूपरेखा का मुख्यभाग (कृपया सविस्तर तैयार की गई रूपरेखा को संलग्न करें)

4.1. बिन्दु .....

4.2. उपबिन्दु .....

4.3. हवाले .....

4.4. उदाहरण .....

5. आपके उपदेश का समापन

5.1. समापन के लिये विचार .....

5.2. समापन के लिये उदाहरण .....

5.3. आमंत्रण का प्रकार .....

मूल्यांकन

प्रचार किये गये उपदेश क्रमांक 1 पर सलाहकार की रिपोर्ट

1. विद्यार्थी का नाम .....

2. उपदेश का शीर्षक .....

3. प्रचार की तारीख .....

4. प्रचार का स्थान .....

5. श्रोताओं का प्रकार .....

6. श्रोताओं की संख्या .....

7. श्रोताओं से प्रतिक्रियाएं और टिप्पणियां .....

8. आमंत्रण को कितने लोगों ने उत्तर दिया .....

9. लिये गये निर्णयों के प्रकार .....

10. ठहारया गया फालो-अप (सलाहकार नियुक्त थे) .....

11. बांटा गया साहित्य .....

12. उपदेश की क्रमबद्धता .....

13. उपदेश की विषय-वस्तु .....

14. आत्मिक लहजा/स्वर .....

15. आरंभ करने की प्रभावकारिता .....

16. आवाज की गुणवत्ता .....

17. उपदेशक की शारीरिक प्रस्तुति .....

18. सलाहकार की अंतिम टिप्पणी .....

19. सलाहकार का नाम .....

20. सलाहकार के हस्ताक्षर .....

21. हस्ताक्षर की तारीख .....

22. हस्ताक्षर का स्थान .....

मूल्यांकन

प्रचार किये गये उपदेश क्रमांक 2 पर सलाहकार की रिपोर्ट

1. विद्यार्थी का नाम .....

2. उपदेश का शीर्षक .....

3. प्रचार की तारीख .....

4. प्रचार का स्थान .....

5. श्रोताओं का प्रकार .....

6. श्रोताओं की संख्या .....

7. श्रोताओं से प्रतिक्रियाएं और टिप्पणियां .....

8. आमंत्रण को कितने लोगों ने उत्तर दिया .....

9. लिये गये निर्णयों के प्रकार .....

10. ठहारया गया फालो-अप (सलाहकार नियुक्त थे) .....

11. बांटा गया साहित्य .....

12. उपदेश की क्रमबद्धता .....

13. उपदेश की विषय-वस्तु .....

14. आत्मिक लहजा/स्वर .....

15. आरंभ करने की प्रभावकारिता .....

16. आवाज की गुणवत्ता .....

17. उपदेशक की शारीरिक प्रस्तुति .....

18. सलाहकार की अंतिम टिप्पणी .....

19. सलाहकार का नाम .....

20. सलाहकार के हस्ताक्षर .....

21. हस्ताक्षर की तारीख .....

22. हस्ताक्षर का स्थान .....

मूल्यांकन

सलाहकार की अंतिम निरीक्षण रिपोर्ट

विद्यार्थी का नाम .....

(स्पष्ट टाईप करें क्योंकि इसे प्रमाणपत्र पर लिखना होगा।)

ऊपरोक्त नाम लिखे गये विद्यार्थी ने, सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश के पाठ्यक्रम का विश्वासयोग्यता और ध्यानपूर्वक रीति से अध्ययन किया है और दिये गये पाठ्य एवं अभ्यास को भी पूरा किया है। मेरे साथ समय-समय पर सलाह लेते हुये और प्रगति की जांच कराते हुये सार्वजनिक रीति से तीन उपदेशों का प्रचार किया है। मैं विद्यार्थी की पहचान को दिये गये निर्देशों के साथ जांचते हुये उसके कार्य को निम्नलिखित निर्णय देता हूं:

श्रेष्ठ सामान्य स्वीकार्य

मैं आशा करता हूं कि विद्यार्थी को इस पाठ्यक्रम से निम्नलिखित बातों का लाभ हुआ है:

अपनी प्रचार की कुशलता को सुधारने हेतु निरंतर अध्ययन करते रहने के लिये, मैं उसे सलाह देता हूं कि:

मैं निम्नलिखित क्षेत्र में उत्तमता हेतु विद्यार्थी की सराहना करता हूं:

अत:, मैं इस विद्यार्थी को प्रमाणपत्र दिये जाने का समर्थन करता हूं।

सलाहकार का नाम: ----------

हस्ताक्षर: ----------

ACKNOWLEDGEMENTS

1

The notes for the first half of this course were prepared and taught by Rev. David Klinsing of Cincinnati, USA and edited

by Dr. Dale Garside of Georgia, USA.

2

The section on the invitation was included from notes by Rev. Dr. Ravi Zacharias, given at the Amsterdam Conference for

Itinerant Evangelists in 1983